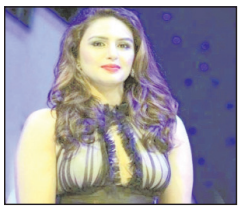

दैनिक

# पुष्पांजली टुडे

नई सोच, नई पहल

■ ग्वालियर ■ वर्ष : 1 ■ अंक : 297

ग्वालियर, रविवार 17 जुलाई 2022

पृष्ठ 8 ■ मूल्य : 2 रु.


## बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे सिर्फ वाहनों को ही नहीं, बल्कि पूरे बुंदेलखंड की औद्योगिक प्रगति को देगा गति: मोदी

### पीएम ने जनता को समर्पित किया बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे

**लखनऊ।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे का उद्घाटन कर जनता को समर्पित किया। पीएम ने अपने उद्बोधन में कहा कि बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे सिर्फ वाहनों को ही नहीं, बल्कि पूरे बुंदेलखंड की औद्योगिक प्रगति को गति देगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य समेत भाजपा के कई नेता मौजूद रहे। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जिस धरती ने अनगिनत सूरवीर पैदा किए, जहां के खून में भारत भक्ति बहती है, जहां के बेटे-बेटियों के पराक्रम और परिश्रम ने हमेशा देश का नाम रोशन किया है, उस बुंदेलखंड की धरती को आज एक्सप्रेस-वे का उपहार देते हुए, उत्तर प्रदेश का सांसद होने के नाते मुझे बहुत खुशी हो रही है।

उन्होंने कहा कि मैं दशकों से उत्तर प्रदेश आता जाता रहा हूं, उत्तर प्रदेश के आशीर्वाद से पिछले 8 साल से देश के प्रधानसेवक के रूप में कार्य करने का आप सबने जिम्मा दिया है। लेकिन मैंने हमेशा देखा कि अगर उत्तर प्रदेश में 2 महत्वपूर्ण चीजें जोड़ दी जाएं, तो उत्तर प्रदेश चुनौतियों को चुनौती देने की बहुत बड़ी ताकत के साथ खड़ा हो जाएगा। पहला मुद्दा था- यहां की खराब कानून व्यवस्था, पहले यहां क्या हाल था ये आप जानते हैं। दूसरा- हर प्रकार से

खराब कनेक्टिविटी। उन्होंने कहा कि बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे से चित्रकूट से दिल्ली की दूरी तो 3-4 घंटे कम हुई ही है, लेकिन इसका लाभ इससे भी कहीं ज्यादा है। ये एक्सप्रेसवे यहां सिर्फ वाहनों को गति नहीं देगा, बल्कि ये पूरे बुंदेलखंड की औद्योगिक प्रगति को गति देगा। उन्होंने कहा कि एक समय था जब माना जाता था कि यातायात के आधुनिक साधनों पर पहला अधिकार सिर्फ बड़े-बड़े शहरों का ही है। लेकिन अब सरकार भी बदली है, मिजाज भी बदला है। ये मोदी है, ये योगी है। पुरानी सोच को पीछे छोड़कर, हम एक नए तरीके से आगे बढ़ रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि यूपी नए संकल्पों को लेकर अब तेज गति से दौड़ने के लिए तैयार हो चुका है। यही सबका साथ है, सबका विकास है। कोई पीछे न छूटे, सब मिलकर काम करें, इसी दिशा में डबल इंजन की सरकार लगातार काम कर रही है। यूपी के छोटे-छोटे जिले हवाई सेवा से जुड़ें, इसके लिए भी तेजी से काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस एक्सप्रेस-वे के बगल में जो स्थान हैं, वहां बहुत सारे किले हैं। यूरोप के बहुत सारे देशों में किले देखने का बहुत बड़ा पर्यटन उद्योग चलता है। मैं आज योगी जी की सरकार से कहूंगा कि अब बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे बनने के बाद आप भी इन किलो को देखने के लिए एक शानदार टूरिज्म सर्किट बनाईये। उन्होंने कहा कि इस एक्सप्रेस-वे के बगल में जो स्थान हैं, वहां बहुत सारे किले हैं। यूरोप के बहुत सारे देशों में किले देखने का बहुत बड़ा पर्यटन उद्योग चलता है। मैं आज योगी जी की सरकार से कहूंगा कि अब बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे बनने के बाद आप भी इन किलो को देखने के लिए एक शानदार टूरिज्म सर्किट बनाईये। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार में आज यूपी जिस तरह आधुनिक हो रहा है।

## पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी पर लगे आरोप राजनीति से प्रेरित: नाना पटोले

**मुंबई।** भारतीय जनता पार्टी सभी सम्मान और मर्यादाओं को तोड़ कर राजनीति कर रही है। झूठे आरोप लगाकर विरोधियों को बदनाम करने की उनकी चाल पुरानी है। अब बीजेपी ने गंदी राजनीति के तहत झूठे आरोप लगाकर पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी को बदनाम करने का भी काम किया है। बीजेपी पर यह हमला महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले ने किया है। पटोले ने कहा कि चरमपंथियों के साथ भारतीय जनता पार्टी के संबंध सर्वविदित हैं। कई लोगों की मौत के लिए जिम्मेदार कुख्यात आतंकवादी मसूर अजहर को तत्कालीन भाजपा सरकार खुद कंधार छोड़ कर आई थी। जम्मू-कश्मीर में गिरफ्तार किए गए दो उग्रवादियों में भाजपा का एक पदाधिकारी भी शामिल है। मध्य प्रदेश में कार्रवाई के दौरान एक पदाधिकारी को गिरफ्तार किया गया, जिसके भाजपा के साथ संबंध की बात सामने आई है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा की कोशिश है कि गुजरात के विधानसभा चुनाव को हिंदू-मुस्लिम का रंग देकर बीजेपी सरकार की नाकामी को छुपाया जाए। लेकिन देश की जनता सब कुछ जानती है।

## पीएम मोदी को बदनाम करने के लिए कांग्रेस ने अपनी तिजोरी से तीस्ता सीतलवाड़ को दिए पैसे : संबित पात्रा

**नई दिल्ली।** भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने गुजरात दंगों को लेकर कांग्रेस पर निशाना साधा और गंभीर आरोप लगाया है। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता संबित पात्रा ने कहा, गुजरात दंगे 2002 में जिस प्रकार प्रधानमंत्री पीएम मोदी को बदनाम करने के लिए कांग्रेस ने अपनी तिजोरी से तीस्ता सीतलवाड़ को दिए पैसे दिए। गुजरात दंगों को लेकर भाजपा ने फर्जी दस्तावेज और शपथ पत्र बनाकर सनसनी फैलाने के आरोप में गिरफ्तार तीस्ता सीतलवाड़ पर एसआईटी ने कोर्ट में हलफनामा दाखिल किया है, जिसे लेकर भाजपा ने कांग्रेस पर हमला बोला है। संबित पात्रा ने कहा, गुजरात दंगे 2002 में जिस प्रकार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपमानित करने की चेष्टा कांग्रेस ने षड्यन्त्र के तहत की थी, परत दर परत उसकी सच्चाई सामने आ रही है।

संबित पात्रा ने कहा, सुप्रीम कोर्ट ने इस पर कहा था कि कुछ लोग षड्यन्त्र के तहत इस विषय को जीवित रखने का प्रयत्न कर रहे थे और गलत तथ्य प्रस्तुत कर रहे थे और अब इन लोगों पर भी कानून का शिकंजा कसे। उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में गठित एसआईटी ने एफिडेविट कोर्ट के सामने रखा है। ये एफिडेविट कहता है कि तिस्ता सीतलवाड़ और उसके सहयोगी मानवता के तहत काम नहीं कर रहे थे। ये राजनीतिक मंसूबे के साथ काम कर रहे थे। इनके 2 आब्जेक्टिव थे। संबित पात्रा ने कहा कि आज एफिडेविट में ये सामने आया है कि षड्यंत्र के रचयिता सोनिया गांधी के पूर्व मुख्य राजनीतिक सलाहकार अहमद पटेल थे। अहमद पटेल तो सिर्फ नाम है, इस सबके पीछे मुख्य रूप से सोनिया गांधी का नाम है। सोनिया गांधी ने गुजरात की छवि खराब करने और पीएम मोदी को अपमानित करने का षड्यंत्र रचा। पात्रा ने कहा, %मोडिया में आए एफिडेविट के अनुसार इस काम के लिए पैसे दिए गए। पहले किस्त के रूप में 30 लाख रुपये सोनिया गांधी ने तिस्ता सीतलवाड़ को दिए। अहमद पटेल हमारे बीच नहीं है, लेकिन उन्होंने तो केवल वो डिलीवरी की थी। ये 30 लाख उस जमाने में मात्र पहली किस्त के रूप में दिए गए थे। इसके बाद न जाने कितने करोड़ों रुपये सोनिया गांधी ने पीएम मोदी को अपमानित और बदनाम करने के लिए दिए।

## सुप्रीम कोर्ट से इमरान को झटका, सत्ता परिवर्तन की साजिश संबंधी दावे खारिज

### खान ने अमेरिका पर स्थानीय सहयोगियों की मदद से उनकी सरकार को बदलने का आरोप लगाया था

**इस्लामाबाद।** पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने सत्ता परिवर्तन की साजिश के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के दावों को खारिज कर दिया है। खान को 10 अप्रैल को अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से हटा दिया गया था, लेकिन उन्होंने संसद के फैसले को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। खान ने अमेरिका पर स्थानीय सहयोगियों की मदद से उनकी सरकार को बदलने का आरोप लगाया था। शीर्ष अदालत ने तीन अप्रैल को तत्कालीन डिप्टी स्पीकर कासिम सूरी द्वारा अविश्वास प्रस्ताव को खारिज करने से संबंधित एक मामले में बृहस्पतिवार को एक विस्तृत फैसले में लिखा कि उसे सत्ता परिवर्तन के दावे के समर्थन में सबूत नहीं मिले। सूरी ने प्रस्ताव को इस आधार पर खारिज कर दिया था कि यह विदेशी मदद से सरकार बदलने का प्रयास था। अदालत ने अपने आदेश में सूरी के फैसले को अवैध घोषित किया था और प्रस्ताव पर मतदान का आदेश दिया था। अदालत ने अपने विस्तृत फैसले में खान और उनके

समर्थकों के इस दावे का समर्थन नहीं किया कि सरकार विदेशी हस्तक्षेप से बदली गई थी। अन्य बातों के अलावा, अदालत ने माना कि आरोप अस्पष्ट थे और सबूतों द्वारा समर्थित नहीं थे। अदालत ने अपने फैसले में कहा ?कि इस आशय का कोई अवलोकन नहीं किया गया था कि अविश्वास प्रस्ताव (आएनसी) विपक्षी दलों द्वारा या पाकिस्तान में व्यक्तियों द्वारा एक विदेशी राष्ट्र के साथ साजिश के तहत पेश किया गया था; और आएनसी को पेश करने के लिए किसी विदेशी राष्ट्र का समर्थन लेने के लिए पाकिस्तान में किसी भी व्यक्ति की भागीदारी की प्रकृति या सीमा का पता लगाने के लिए मामले में कोई जांच-पड़ताल का आदेश नहीं दिया गया था।

## खास खबर

### पाकिस्तान के सिंध में युवक की हत्या के बाद झड़प, 160 लोग गिरफ्तार

**कराची।** पाकिस्तान के सिंध प्रांत में सिंधियों और पश्तूनों के बीच झड़प होने के बाद करीब 160 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। हैदराबाद के होटल में एक सिंधी व्यक्ति की हत्या के बाद दोनों समुदायों के बीच झड़प हुई। बिलाल काका (35) नामक एक व्यक्ति को एक पश्तून होटल के मालिक ने पीटा और बाद में उसकी हत्या कर दी। यह घटना मंगलवार को हैदराबाद में हुई थी। भोजन के बिल को लेकर विवाद शुरू हुआ था। खबरों के अनुसार, काका और उसके चार दोस्तों ने होटल के मालिक शाह सरवर पठान को धमकी दी थी जिससे स्थिति बिगड़ गई। दोनों समुदायों के बीच कई स्थानों पर झड़पें हुईं।

### अमेरिका में सड़क पर आपस में टकराए दो दर्जन से अधिकस वाहन, 5 लोगों की मौत

**हार्डिन।** अमेरिका में मोंटाना राज्य के इंटरस्टेट-90 मार्ग पर शुक्रवार शाम दो दर्जन से अधिक वाहनों के आपस में टकरा जाने के कारण पांच लोगों की मौत हो गई है। प्राधिकारियों ने बताया कि इस हादसे में बड़ी संख्या में लोग हताहत हुए हैं। गवर्नर ग्रेग गियाकोनें ने ट्वीट किया मैं हार्डिन के समीप बड़ी संख्या में लोगों के हताहत होने की खबर से दुखी हूं। कृपया मेरे साथ पीड़ितों और उनके प्रियजनों के लिए दुआ कीजिए। हम बचावकर्ताओं के उनकी सेवा के लिए आभारी हैं। यह हादसा हार्डिन से 5 किलोमीटर दूर पश्चिम में हुआ।

### सिद्धू ने घुटने के जोड़ों में तेज दर्द, डॉक्टर ने कहा जमीन पर न सोए

**चंडीगढ़।** पटियाला सेंट्रल जेल में बंद कांग्रेस नेता नवजोत सिद्धू ने घुटने के जोड़ों में तेज दर्द की शिकायत की है। शिकायत के बाद ऑर्थोपेडिक सर्जन ने जेल में सिद्धू की जांच कर उन्हें जमीन पर न सोने की सलाह दी है। इसके बाद जेल प्रशासन ने सिद्धू के लिए लकड़ी के बिस्तर की व्यवस्था की है।1988 के रोड रेज मामले में सिद्धू एक साल की जेल की सजा काट रहे हैं। पंजाब कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष कथित तौर पर जोड़ों के दर्द के कारण नियमित काम करने में असमर्थ हैं। यह पता चला है कि सिद्धू को जमीन पर सोना पड़ता है और अपने 123 किलो वजन को देखते हुए उनके लिए उठना मुश्किल होता है। सिद्धू की टॉयलेट सीट भी उनकी हाइट और वजन के लिए कम है। जांच के बाद डॉक्टर ने सिद्धू को वजन कम करने की सलाह दी थी। उन्हें घुटने मजबूत करने वाले व्यायाम- क्वाड्रिसेप्स और हैमस्ट्रिंग एक्सरसाइज की सलाह दी गई है। साथ ही सिद्धू को फर्श पर नहीं बल्कि बिस्तर पर सोने की सलाह दी गई है।

### लैपटॉप-कंप्यूटर में वायरस डालकर की 170 रुपये करोड़ की ठगी

**नोएडा।** उत्तर प्रदेश के नोएडा में विशेष जांच दल ने एक फर्जी अंतरराष्ट्रीय कॉल सेंटर का भंडाफोड़ करते हुए 10 लोगों को गिरफ्तार किया है। ये लोग विदेशियों के लैपटॉप-कंप्यूटर में वायरस डालने के बाद उसे ठीक कराने के नाम पर 170 करोड़ रुपये से ज्यादा की ठगी कर चुके थे। एसटीएफ के एक अधिकारी ने यह जानकारी देते हुए बताया कि शुक्रवार को नोएडा के सेक्टर-59 स्थित बी-36 में कथित कॉल सेंटर पर छापा मारा और गिरोह के सरगना सहित 10 लोगों को गिरफ्तार किया। आरोपियों ने अमेरिका से लेकर दुबई तक के सैकड़ों लोगों से ठगी की बात स्वीकार की है।

## भारत में मंकीपॉक्स का पहला मामला सामने आया, दिल्ली सरकार सतर्क

### -लक्षण दिखे तो मरीज का इलाज एलएनजेपी में चलेगा

**नई दिल्ली।** देश में अभी कोरोना वायरस से पूरी तरह मुक्ति नहीं मिली और अब एक और घातक वायरस मंकीपॉक्स का प्रवेश भारत में हो गया है। पहला मंकीपॉक्स वायरस का मामला सामने आने पर दिल्ली सरकार सतर्क हो गई है। लोकनायक अस्पताल को मंकीपॉक्स का नोडल सेंटर बनाया गया है। राजधानी में मंकीपॉक्स का संदिग्ध केस आने पर उसे यहीं आइसोलेट किया जाएगा। अभी तक दिल्ली में कोई केस नहीं है, मगर सूत्रों ने कहा कि सरकार ने अस्पताल को तैयार रहने के लिए कहा है। एलएनजेपी अस्पताल के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. सुरेश कुमार ने इस कदम की पुष्टि की। उन्होंने बताया कि हम अपने डॉक्टर्स और स्टाफ को मंकीपॉक्स के मामलों के आइसोलेशन, ट्रेसिंग और मैनेजमेंट से जुड़ी सारी साइंटिफिक गाइलेंस और स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (एसओपी) दे रहे हैं। देश में मंकीपॉक्स का पहला मामला केरल के कोल्लम जिले में मिला है। यहां यूएई से

लौटकर आया एक 35 वर्षीय व्यक्ति संक्रमित पाया गया। मंकीपॉक्स एक एक्यूट वायरल बीमारी है जिसके लक्षण स्मॉलपॉक्स से मिलते-जुलते हैं। शुरुआती लक्षणों में बुखार, तगड़ा सिरदर्द, कमर दर्द, मांसपेशियों में दर्द और त्वचा की ऊपर परत उखड़ना शामिल हैं। डॉ. सुरेश कुमार ने बताया कि अभी इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है और लक्षण के आधार पर ट्रीटमेंट होता है।

सरदाना ने कहा कि जिन देशों में यह बीमारी एनडेमिक थी, वहां से आने वालों की स्क्रीनिंग होनी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि सरकार को एयरपोर्ट्स पर मंकीपॉक्स के मरीजों की ग्राफिक तस्वीरें लगानी चाहिए ताकि वे खुद से जानकारी दे सकें। आरएमसी के डॉक्टर ने कहा कि कन्फर्म मामलों का समय रहते पता लगना और आइसोलेशन बेहद जरूरी है। स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से जारी गाइडलाइन में कहा गया है कि मंकीपॉक्स के एक मामले को भी आउटब्रेक माना जाएगा। मंकीपॉक्स के मामले की पुष्टि पीसीआर या सीक्वेंसिंग के जरिए होती है। गाइडलाइन के अनुसार, कन्फर्म मामले की लक्षण दिखने के बाद कम से कम 21 तक दिन तक निगरानी की जानी चाहिए। मंकीपॉक्स जानवर के जरिए इंसान में फैल सकता है और इसके बाद इंसान से इंसान में संक्रमण हो सकता है। इसका इनक्यूबेशन पीरियड 5 से 21 दिन का है।

## पोस्टर लगाकर भाजपा ने ममता पर बोला हमला, आदिवासी विरोधी हैं ममता बनर्जी

**कोलकाता।** राष्ट्रपति चुनाव से पहले पश्चिम बंगाल में सियासी जंग तेज हुई है। इस बीच भाजपा ने यहां पर एक पोस्टर लगाया है। पोस्टर में बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को आदिवासी विरोधी बताया गया है। पोस्टर में एनडीए की राष्ट्रपति उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मु और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीरें लगी हैं। गौरतलब है कि टीएमसी राष्ट्रपति चुनाव में यशवंत सिन्हा का समर्थन कर रही है। पोस्टर पर लिखा है कि भाजपा ने एक आदिवासी जनजाति महिला को देश के सर्वोच्च पद के लिए मनोनीत किया। साथ ही भाजपा ने देश के सभी आदिवासी जनजाति संप्रदाय का सम्मानित किया है। यह आदिवासी जनजाति संप्रदाय का गर्व का विषय है।

पोस्टर में आगे मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के ऊपर निशाना साधा गया है। पोस्टर में कहा गया है कि ममता आदिवासी जनजाति संप्रदाय के उम्मीदवार का समर्थन न करके किसी अन्य का समर्थन कर रही हैं। वह आदिवासी समाज के करीब आने से हिचकिचा रही हैं।

यह भिन्नता थी और रहेगी। इस पोस्टर के पीछे है, राष्ट्रपति चुनाव में ममता को यशवंत सिन्हा सपोर्ट देना। बताया जाता है कि विपक्ष के लिए उम्मीदवार चुनने में ममता ने ही सबसे अहम भूमिका निभाई है। हालांकि बीते दिनों जब सत्ता पक्ष ने द्रौपदी मुर्मू को समर्थन दिया, तब ममता ने बयान जारी किया।

## बच्चों को मुफ्त और अच्छी शिक्षा देना, मुफ्त की रेवड़ी बांटना नहीं कहते: केजरीवाल

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शनिवार को बिना किसी का नाम लिए मुफ्त में सुविधाएं उपलब्ध कराने वाली राजनीति की तीखी आलोचना पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने दिल्लीवासियों को मुफ्त सुविधाएं देने पर जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि अपने देश के बच्चों को मुफ्त और अच्छी शिक्षा देना और लोगों का अच्छा और मुफ्त इलाज करवाना, इस मुफ्त की रेवड़ी बांटना नहीं कहते। इस देश की नींव रखना कहते हैं। दरअसल, प्रधानमंत्री मोदी ने मुफ्त में सुविधाएं उपलब्ध कराने वाली राजनीति की तीखी आलोचना करते हुए कहा कि यह %रेवड़ी कल्चर% देश के विकास के लिए बहुत घातक है। इसपर केजरीवाल ने कहा कि अपने देश के बच्चों को मुफ्त और अच्छी शिक्षा देना और लोगों का अच्छा और मुफ्त इलाज करवाने को मुफ्त की रेवड़ी बांटना नहीं कहते। हम एक विकसित और गौरवशाली भारत की नींव रख रहे हैं। ये काम 75 साल पहले हो जाना चाहिए था।

केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों में 18 लाख बच्चे पढ़ते हैं। देशभर में सरकारी स्कूलों का बेड़ा गर्क था वैसे ही दिल्ली के सरकारी स्कूलों की हालत थी। 18 लाख बच्चों का भविष्य बर्बाद था। आज हमने अगर इन बच्चों का भविष्य ठीक किया तब मैं क्या गुनाह कर रहा हूं? मुख्यमंत्री ने कहा कि ये फ्री की रेवड़ी क्या होती हैं मैं आपको बताता हूं। एक कंपनी ने कई बैंकों से हजारों करोड़ रुपयों का लोन लेकर सारे पैसे खा गए। बैंक दिवालिया हो गया और उस कंपनी ने एक राजनीतिक पार्टी को कुछ करोड़ों रुपये का चंदा दे दिया और उस कंपनी के खिलाफ सरकार ने कोई एक्शन नहीं लिया। ये फ्री की रेवड़ी बांटना होता है। हम एक-एक चीज में पैसा बचाकर जनता की भलाई के काम करते हैं। कैग की रिपोर्ट के अनुसार 2015 के बाद से जब से हमारी सरकार आई है, तब से दिल्ली का बजट फायदे में चल रहा है। हमने जनता पर एक रुपये टैक्स भी नहीं बढ़ाया और सुविधाएं भी मुफ्त दे रहे हैं। दरअसल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जालौन में मुफ्त में सुविधाएं उपलब्ध कराने वाली राजनीति की तीखी आलोचना करते हुए कहा कि यह रेवड़ी कल्चर देश के विकास के लिए बहुत घातक है।

## बच्ची ने आकर छुए सेना के जवान के पैर, भावुक हुआ जवान,वीडियो देख भावुक हुई केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी

**नई दिल्ली।** सोशल मीडिया पर बहुत ही प्यारी वीडियो वायरल हो रही, जिस देखकर हर किसी के आंखों से खुशी के आंसु तो निकल जाएंगे। बता दें कि वीडियो में एक छोटी सी बच्ची सुरक्षाकर्मी के पैर छू रही है। यह देखकर जवान काफी भावुक हो जाता है। यह वीडियो इतनी प्यारी है कि इस खुद केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने भी रीट्वीट किया है। केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने वीडियो शेयर कर लिखा कि इस बेटी के परिवार को आभार, जिन्होंने बच्ची को इतने उत्तम संस्कार दिए। वीडियो में कुछ सेना के जवान मेट्रो स्टेशन के पास खड़े हैं, तभी एक छोटी सी बच्ची दौड़ते हुए उनके पास जाती है और एक जवान के पैर छू लेती है। यह देखकर जवान भावुक हो जाता है और बच्ची को प्यार करने लगता है। दुलार से बच्ची के माथे पर चूमता भी है। बगल में खड़े दूसरे जवान भी यह देखकर काफी खुश हो जाते हैं। वीडियो में साफ दिखाई दे रहा है कि कैसे एक छोटी सी बच्ची देश के जवानों को सम्मान दे रही है। बता दें कि इस वीडियो को अब तक 2 लाख से अधिक व्यूज मिल चुके हैं और हजारों लोगों ने कमेंट किया है। वीडियो को करीब 20 हजार से ज्यादा लाइक्स भी मिले हैं। वीडियो पर कई यूजर्स ने कमेंट भी किया है। एक ने लिखा, बच्चों को शुरू से इन चीजों की शिक्षा दी जानी चाहिए। वहीं अन्य ने लिखा कि ये भारतीयता है, ये हमारी संस्कृति है।

## न्यूज़ ट्रैक....

### विश्व की पूर्व शीर्ष टेनिस खिलाड़ी मारिया शारापोवा बनी मां, बेटे को दिया जन्म, पहली तस्वीर शेयर कर नाम बताया

**लंदन** । टेनिस की पूर्व विश्व नंबर-1 सितारा खिलाड़ी मारिया शारापोवा मां बन गईं हैं उन्होंने मंगेतर अलेक्जेंडर गिलक्स के साथ अपने बेटे के जन्म की घोषणा कर दी। उन्होंने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर कर फैंस को यह जानकारी दी। उन्होंने इस पोस्ट के साथ एक तस्वीर भी शेयर की है, जिसमें मारिया के हाथों में उनका बेटा नजर आ रहा है और पास में उनके मंगेतर भी बैठे हैं। मारिया शारापोवा ने इस पोस्ट के साथ कैप्शन लिखा,卐हमारा छोटा सा परिवार इससे सुंदर, चुनौतीपूर्ण और दिल को छूने वाला उपहार नहीं मांग सकता था।卐 पांच बार की ग्रैंड स्लैम चैम्पियन शारापोवा के बेटे का नाम थियोडोर है। उन्होंने रोमन अंक भी पोस्ट किया, जिसमें बेटे थियोडोर के पैदा होने की तारीख 1 जुलाई बताई है।

### नवनीत को राष्ट्रमंडल खेलों में बेहतर प्रदर्शन का भरोसा

**टेरासा** ।भारतीय महिला हॉकी टीम की फॉर्वर्ड नवनीत कौर को उम्मीद है कि उनकी टीम 28 जुलाई से शुरू होने राष्ट्रमंडल खेलों में बेहतर प्रदर्शन करेगी। भारतीय टीम को राष्ट्रमंडल खेलों में अपना पहला मैच 29 जुलाई को घाना से खेलना है। भारतीय टीम एफआईएच महिला हॉकी विश्व कप में उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर पायी और नौंवे स्थान पर रही है। नवनीत ने कहा कि विश्व कप में खेले गए मैचों से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला है। इसका लाभ हमें राष्ट्रमंडल खेलों में मिलेगा। भारत को विश्व कप में जहां जापान से जीत वहीं स्पेन के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। नवनीत ने कहा कि जब हम स्पेन के खिलाफ मैच हारे तो हम बेहद निराश थे पर इसके बाद हमने कनाडा और जापान पर जीत दर्ज की। नवनीत ने कहा कि हम सिर्फ इन दोनों टीमों के खिलाफ जीत दर्ज कर अपना विश्व कप अभियान को सकारात्मकता के साथ समाप्त करना चाहते थे। भारत ने शूटआउट में कनाडा को 2-3 से हराया। इसके बाद जापान पर 3-1 से जीत दर्ज कर टूर्नामेंट में नौंवा स्थान हासिल किया। नवनीत ने कहा कि मुझे लगता है कि हम कनाडा के खिलाफ और भी बेहतर कर सकते थे और मैच को शूटआउट में नहीं जाने से रोक सकते थे।

### विराट किसी अच्छे कोच के पास जाकर लय हासिल करें : लतीफ

**लाहौर** । पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान राशिद लतीफ ने कहा है कि खराब फार्म से परेशान भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली को किसी अच्छे कोच के पास जाकर लय हासिल करने का प्रयास करना चाहिये। राशिद के अनुसार हर किसी के खेल में कोई न कोई कमजोरी है पर आजकल तकनीक इतनी आगे बढ़ गयी है कि बल्लेबाजों की कमजोरी जल्दी सामने आ जाती है। इसके बाद भी खिलाड़ियों ने अपने खेल में बदलाव नहीं किय है। यह उनकी परेशानी का कारण बन रहा है। केन विलियमसन भी कोहली जैसे ही खराब दौर से गुजर रहे हैं। उनके लिए शॉर्ट ऑफ लेंथ गेंद परेशानी का कारण बनी हुई हैं। ऐसे में सभी खिलाड़ियों को अपने खराब दौर में मूल बातों पर ध्यान देते हुए सर्वश्रेष्ठ कोच से बात करके अपनी कमजोरी को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इस समय कोहली अपने करियर के सबसे कठिन दौर से गुजर रहे हैं।

*अमेरिका में चल रही वर्ल्ड एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में महिलाओं की 1500 मीटर दौड़ के दौरान जेसीका हॉल और टीम आस्ट्रेलिया की फेथ किपयेगॉन से आगे निकलने की होड़ में।*

#### बुरे दौर में श्रीलंका

## क्रिकेटर चमिका करुणारत्ने को पेट्रोल भराने लगना पड़ा क्यू में

**नई दिल्ली** । आर्थिक और राजनीतिक मोर्चे पर पूरी तरह विफल होने के बाद श्रीलंका सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है। राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे देश छोड़कर चले गए हैं। श्रीलंका के कई शहरों में कर्फ्यू लगा दिया गया है। हालात सुधरने के बजाए बिगड़ते जा रहे हैं। खासतौर पर खाने-पीने के सामान के साथ पेट्रोलियम पदार्थों की भारी किल्लत हो गई है। पेट्रोल के लिए लोगों को दो-दो दिन तक इंतजार करना पड़ रहा है। क्या आम और क्या खास, सब एक की कतार में आ गए हैं। श्रीलंका के क्रिकेटर चमिका करुणारत्ने को अपनी कार में पेट्रोल भराने के लिए खासी मशक्कत करनी पड़ी। उन्हें 2 दिन के इंतजार के बाद पेट्रोल मिला। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि आम आदमी पेट्रोल को लेकर कितना परेशान होगा।

चमिका करुणारत्ने ने 2019 में इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू किया था। उन्होंने एक बातचीत में देश की मौजूदा स्थिति पर मायूसी जताई। करुणारत्ने ने ईंधन संकट पर कहा, %2 दिन लंबी कतार में लगे रहने के बाद खुशकिस्मत हूं कि मुझे पेट्रोल मिल गया। इस वक्त देश में भारी ईंधन संकट है। सारा वक्त इसी में निकल जाता है। इसी वजह से प्रैक्टिस तक करने नहीं जा पा रहा हूं।% 1948 में स्वतंत्रता के बाद से श्रीलंका ने कभी भी ईंधन और आर्थिक संकट नहीं देखा है। हालात ऐसे हैं कि केवल 10 फीसदी ही लोग ईंधन हासिल कर पा रहे हैं। श्रीलंका को इस साल के एशिया कप की मेजबानी मिली है। टूर्नामेंट अगस्त में खेला जाना है। लेकिन श्रीलंका आजादी के बाद से अपने सबसे बड़े आर्थिक संकट को झेल रहा है। देश में ईंधन की भारी कमी हो गई है। करुणारत्ने को भी यह नहीं पता कि आगे क्या होगा। उन्होंने कहा, मैं ऐसे पेट्रोल के लिए लाइन में लगा हूं, जब दो अहम सीरीज और लंका प्रीमियर लीग के मुकाबलों की घोषणा हो चुकी है।

उन्होंने आगे कहा, %एशिया कप होना है और लंका प्रीमियर लीग भी खेला जाना है। मुझे नहीं पता कि क्या होगा, क्योंकि मुझे अभ्यास के लिए कोलंबो और अलग-अलग शहरों में जाना है और क्लब सीजन में भी हिस्सा लेना है। ईंधन की कमी के कारण मैं अभ्यास में नहीं जा पा रहा हूं। दो दिन से मैं कहीं नहीं गया, क्योंकि मैं गाड़ी में पेट्रोल भराने के लिए लंबी कतार में लगा हूं। सौभाग्य से मुझे आज मिल गया लेकिन दस हजार रुपये में।

## बीडब्ल्यूएफ ने रद्द किया अमरीकी ओपन बैडमिंटन

**लंदन** । विश्व बैडमिंटन की शीर्ष संस्था (बीडब्ल्यूएफ) ने अमरीकी ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट रद्द कर दिया है। बीडब्ल्यूएफ ने यह कदम अमरीका में कोविड-19 के बढ़ते मामलों के कारण आयोजन में आ रही दिक्कतों में देखते हुए लिया है। बीडब्ल्यूएफ सुपर 300 टूर्नामेंट का आयोजन इस साल चार से नौ अक्टूबर तक होना था। बीडब्ल्यूएफ ने कहा, 'अमरीका बैडमिंटन का मानना है कि कोरोना संक्रमण के कारण आयोजन से जुड़ी परेशानी को देखते हुए उसके लिए इस साल टूर्नामेंट की मेजबानी करना सही नहीं रहेगा।' इस घातक वायरस के कारण तीसरी बार इस टूर्नामेंट को रद्द किया गया है। बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर जकार्ता में इंडोनेशिया मास्टर्स सुपर 500 के साथ बहाल हुआ। कर दिया है। बीडब्ल्यूएफ ने यह कदम अमरीका में कोविड-19 के बढ़ते मामलों के कारण आयोजन में आ रही दिक्कतों में देखते हुए लिया है। बीडब्ल्यूएफ सुपर 300 टूर्नामेंट का आयोजन इस साल चार से नौ अक्टूबर तक होना था।

# आस्ट्रेलिया में होने वाले टी-20 वर्ल्ड कप में 16 टीमें लेंगी हिस्सा

#### अक्टूबर-नवंबर माह में होगा मैच

**नई दिल्ली** । टी20 वर्ल्ड कप की फाइनल टीमें भी तय हो गई हैं। वर्ल्ड कप के क्वालिफायर के फाइनल में जिम्बाब्वे और नीदरलैंड्स ने अपनी जगह पक्की कर ली है। इसी के साथ दोनों को टूर्नामेंट का टिकट भी मिल गया है। इस बार वर्ल्ड कप में कुल 16 टीमें शामिल होने वाली हैं। मुकाबले अक्टूबर-नवंबर में ऑस्ट्रेलिया में होने हैं। टीम इंडिया भी इस बार अच्छा प्रदर्शन करना चाहेगी। भारत ने अंतिम बार 2007 में टी20 वर्ल्ड कप खिताब जीता था। यानी भारत 15 साल से खिताब का इंतजार कर रहा है। रोहित शर्मा का बतौर कप्तान रिकॉर्ड अच्छा है। ऐसे में उन पर निगाहें होंगी। जिम्बाब्वे ने क्वालिफायर के सेमीफाइनल में पापुआ न्यू गिनी को जबकि नीदरलैंड्स ने अमेरिका को हराया। इस तरह से अमेरिका के वर्ल्ड कप में उतरने का सपना पूरा नहीं हो सका। नीदरलैंड्स ने अमेरिका को 7 विकेट से हराया।

मैच में अमेरिका की टीम पहले खेलते हुए सिर्फ 138 रन ही बना सकी। कप्तान मोनांक पटेल ने सबसे अधिक 32 रन बनाए। जवाब में नीदरलैंड्स ने लक्ष्य को 19 ओवर में 3 विकेट पर हासिल कर लिया। फाइनल में रविवार को उसकी भिडंत मेजबान जिम्बाब्वे से होगी। जिम्बाब्वे ने पहले खेलते हुए 5 विकेट पर 199 रन का ब?ा स्कोर बनाया था। वेस्ले माधवेरे ने सबसे अधिक 42 रन बनाए। इसके अलावा कप्तान क्रेग इरविन ने 38 और रेगिस चकबावा ने 30 रन का योगदान दिया। जवाब में पीएनजी की टीम 20 ओवर में 8 विकेट पर 172 रन ही बना सकी। टोनी उरा ने सबसे अधिक 66 रन बनाए, लेकिन वे टीम को जीत नहीं दिला सके। ब्लेसिंग मुजरबानी ने 2 विकेट झटके।

जिम्बाब्वे और नीदरलैंड्स ने इसी के साथ वर्ल्ड कप के लिए राउंड-1 में जगह बना ली है। इसमें कुल 8 टीमों को मौका दिया गया है। इन्हें 2 ग्रुप में बांटा गया है। दोनों ग्रुप की टॉप-2 टीमें सुपर-12 राउंड में प्रवेश करेंगी। राउंड-1 के ग्रुप-ए में नामीबिया, श्रीलंका और यूएई को जगह मिली है। नीदरलैंड्स और जिम्बाब्वे के बीच फाइनल की उपविजेता टीम इस ग्रुप में खेलेगी। वहीं ग्रुप-बी में आयरलैंड, स्कॉटलैंड, वेस्टइंडीज और नीदरलैंड्स व जिम्बाब्वे के बीच मैच की विजेता टीम को जगह दी गई है।

सुपर-12 में 2 ग्रुप बनाए गए हैं। ग्रुप-1 में अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड को जगह मिली है। इसके अलावा क्वालिफायर से भी 2 टीमों को इसमें जगह मिलेगी। ग्रुप-ए की विनर और ग्रुप-बी की रनरअप टीम को यहां खेलना है। वहीं ग्रुप-2 में बांग्लादेश, भारत, पाकिस्तान और साउथ अफ्रीका को जगह मिली है। इसके अलावा राउंड-1 की ग्रुप-बी की विनर और ग्रुप-ए की रनरअप टीम को भी जगह दी गई है। ऐसे में यहां वेस्टइंडीज के भी खेलने की संभावना अधिक है। दोनों ग्रुप की टॉप-2 टीमें सेमीफाइनल में जाएंगी। सेमीफाइनल के मुकाबले 9 और 10 नवंबर को खेले जाएंगे। वहीं फाइनल 13 नवंबर को होना है। मेजबान ऑस्ट्रेलिया की टीम टूर्नामेंट की डिफेंडिंग चैंपियन है। इस बार मुकाबले उसी के यहां खेले जा रहे हैं। ऐसे में उसका पल?ा भारी है।

### टी20 वर्ल्ड कप में टीम इंडिया के मुकाबले

23 अक्टूबर विरुद्ध पाकिस्तान
-27 अक्टूबर विरुद्ध ग्रुप-ए रनरअप
-30 अक्टूबर विरुद्ध साउथ अफ्रीका
-2 नवंबर विरुद्ध बांग्लादेश
-6 नवंबर विरुद्ध ग्रुप-बी चैंपियन

## बिग बैश लीग का 12 सत्र इस साल के अंत में शुरु होगा

**कैनबरा** । ऑस्ट्रेलियाई घरेलू बिग बैश लीग (बीबीएल) का 12 वां सत्र इस साल 13 दिसंबर से शुरु हो रहा है। बीबीएल के 12वें सीजन में कुल 56 मुकाबले खेले जाएंगे। सत्र के पहले मुकाबले में सिडनी थंडर की टीम मेलबर्न स्टार्स से खेलेगी। इन दोनों के बीच यह मुकाबला मानुका ओवल में खेला जाएगा। बीबीएल के 10वें सीजन में सिडनी सिक्सर्स ने पर्थ स्कार्चर्स को हराकर खिताब जीता था। वहीं 11वें सीजन में पर्थ स्कार्चर्स ने सिक्सर्स की टीम को पराजित कर खिताब पर कब्जा किया था। बीते साल की तरह इस सत्र में भी कुल आठ टीमें भाग ले रही हैं। इन टीमों में एडिलेड स्ट्राइकर्स, मेलबर्न स्टार्स, सिडनी थंडर, ब्रिस्बेन हीट, होबार्ट हरिकेंस, मेलबर्न रेनेगेड्स, पर्थ स्कार्चर्स और सिडनी सिक्सर्स का नाम शामिल है। लीग के ग्रुप स्तर के मुकाबले 13 दिसंबर 2022 से 25 जनवरी 2023 के बीच खेले जाएंगे। वहीं इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट का एलिमिनेटर मुकाबला 27 जनवरी खेला जाएगा। इसके अलावा क्वालीफायर और नॉकआउट मुकाबले 28 और 29 जनवरी को आयोजित किए जाएंगे। चैलेंजर मैच दो फरवरी एवं फाइनल मुकाबला चार फरवरी को खेला जाएगा।

## व्यापार न्यूज

### सोना 50 हजार, चांदी भी फिसलकर 55 हजार के नीचे रही

नई दिल्ली ।बीते सप्ताह सोने और चांदी की कीमतों में ब?ी गिरावट देखी गई। एक वेबसाइट के अनुसार सर्राफा बाजार में इस हफ्ते सोना 521 रुपए सस्ता होकर 50,403 प्रति 10 ग्राम पर आ गया है। इस हफ्ते की शुरुआत 11 जुलाई को ये 50,924 रुपए पर था। इस हफ्ते चांदी की कीमत में डेढ़ हजार रुपए से ज्यादा की गिरावट आई है। इस हफ्ते की शुरुआत में ये 56,745 रुपए पर थी जो अब 54,767 रुपए प्रति किलोग्राम पर आ गई है यानी इस हफ्ते इसकी कीमत 1,978 रुपए कम हुई है। ?विशेषज्ञों का मानना है कि इस साल मानसून बेहतर रहा तो सोने की खरीद आने वाले समय में तेजी आ सकती है। वै?श्विक बाजार में भी सोने की खपत बढ़ने की उम्?मीद है, जिसका सीधा असर उसकी कीमतों पर पड़ेगा और घरेलू बाजार में भी सोना महंगा हो जाएगा। चांदी की इंडस्ट्रियल मांग लगातार बढ़ रही है, जो आने वाले समय में इसकी कीमतों में एक बार फिर इजाफा कराएगी।

### विमान ईंधन की कीमत में गिरावट

नई दिल्ली ।विमान ईंधन (एटीएफ) की कीमत में शनिवार को 2.2 प्रतिशत की कटौती की गई, जो अंतरराष्ट्रीय तेल कीमतों में गिरावट को दर्शाती है। सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम कंपनियों की मूल्य अधिसूचना के अनुसार एटीएफ के दाम में 3,084.94 रुपए प्रति किलोलीटर की कटौती करके इसे 1,38,147.93 रुपए प्रति किलोलीटर कर दिया गया है। एटीएफ की कीमत इस साल केवल दूसरी बार कम की गई है। पिछले महीने इसकी कीमत 1,41,232.87 रुपए प्रति किलोलीटर (141.23 रुपए प्रति लीटर) के चरम पर पहुंच गई थी। एटीएफ के दाम पिछले पखवाड़े अंतरराष्ट्रीय तेल कीमतों के आधार पर हर महीने की पहली और 16वीं तारीख को संशोधित किए जाते हैं। इससे पहले एक जुलाई को कीमत में कोई बदलाव नहीं किया गया था।

### इंडियन बैंक को नाबार्ड से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का पुरस्कार मिला

चेन्नई । सार्वजानिक क्षेत्र के इंडियन बैंक को राष्टीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले बैंक का पुरस्कार मिला है। बैंक को यह पुरस्कार स्वयं सहायता समूह से जु? कार्यक्रम की श्रेणी में मिला है। इंडियन बैंक के अनुसार तमिलनाडु के वित्त और मानव संसाधन मंत्री पलानीवेल त्यागराजन ने हाल में नाबार्ड के 41वें स्थापना दिवस के दौरान बैंक के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी एसएल जैन को यह पुरस्कार दिया।

## नेचुरल रिसोर्स की नहीं हो पाएगी चोरी, सरकार कर रही नई लेखांकन प्रणाली का विकास

### खनिज पदार्थों के मामले में झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, राजस्थान, पश्चिम बंगाल राज्य सबसे अमीर, यहीं से अ?धिक आते हैं खनिजों की चोरी के मामले

**नई दिल्ली** । अपने यहां खनिज पदार्थों के मामले में कुछ राज्य बेहद अमीर हैं। इन राज्यों में झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, राजस्थान, पश्चिम बंगाल आदि आते हैं। लेकिन इन राज्यों में इन प्राकृतिक संसाधनों की चोरी भी खूब होती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि राज्य सरकारों को अपने नेचुरल रिसोर्सेज की सही-सही जानकारी ही नहीं है। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा क्योंकि नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक सीएजी के (जीएएसएबी) खनिज एवं ऊर्जा समेत विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों का लेखा-जोखा तैयार कर रहा है। इन आंकड़ों के आधार पर सरकार न केवल नीतिगत निर्णय ले सकेगी बल्कि इससे ग्रीन जीडीपी के लक्ष्य को हासिल करने में भी मदद मिलेगी। इस समय झारखंड, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में खनिज पदार्थों की चोरी की अक्सर खबर आती है। राज्य सरकार कहती है कि उन्होंने खदान का पट्टा किसी सरकारी या निजी कंपनी को दिया हुआ है। संबंधित कंपनी कहती है कि उनकी खदानों से चोरी नहीं हो रही है। इसकी वजह यह है कि राज्यों को नेचुरल रिसोर्स की सही सही जानकारी ही नहीं है। अब जो नई लेखांकन प्रणाली का विकास हो रहा है, उससे राज्यों को नेचुरल रिसोर्स की सही जानकारी मिलेगी। साथ ही इससे नेचुरल रिसोर्स के जिम्मेदार उपयोग में मदद मिलेगी। इससे सतत विकास को बढ़ावा मिलेगा।

जीएएसबी के चेयरमैन एवं देश के उप नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के. श्रीनिवासन ने इस नई पहल के बारे में एनबीटी डिजिटल को बताया कि सब चार प्रमुख प्राकृतिक संसाधनों खनिज और ऊर्जा संसाधन, जल संसाधन, भूमि संसाधन और वानिकी एवं वन्य जीव संसाधनों का अकाउंट तैयार कर रहा है। इस पहल का मकसद रिसोर्सेज की उपलब्धता, उनसे मिलने वाले राजस्व की संभावना, संबद्ध लागत और अगली पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए सतत विकास को आगे बढ़ाना है। इस पहल से राज्यों में मौजूद रिसोर्सेज के बारे में समूचा ब्योरा एक जगह उपलब्ध होगा। इससे राज्यों को मिलने वाले रॉयल्टी दरों के आकलन के साथ राज्यों के राजस्व हितों की रक्षा सुनिश्चित हो सकेगी। साथ ही यह संसाधनों के सतत उपयोग तथा भविष्य के राजस्व का सटीक आकलन के साथ अवैध खनन रोकने में भी मददगार होगा।

श्रीनिवासन ने बताया कि जीएएसबी ने जुलाई 2020 में एक कंसेप्ट पेपर तैयार किया था। इसमें लघु, मध्यम और दीर्घकालीन लक्ष्यों की परिकल्पना की गई है। इसका पहला लक्ष्य खनिज और ऊर्जा संसाधनों पर संपत्ति लेखा-जोखा तैयार करना है। सभी 28 राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश (जम्मू-कश्मीर) के लिये 2020-21 का संपत्ति खाता तैयार कर लिया गया है। इसमें 34 प्रमुख खनिजों, 58 लघु खनिजों एवं सभी चार जीवाश्म ईंधनों का पूरा विवरण दिया गया है। श्रीनिवासन ने कहा ?कि राज्यों में उपलब्ध खनिज और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के आंकड़ों से न केवल सरकार सोच-विचार कर नीतिगत निर्णय ले सकेगी बल्कि इससे हरित जीडीपी के लक्ष्य को हासिल करने में भी मदद मिलेगी। मध्यम अवधि के लक्ष्य के तहत खनिज और ऊर्जा संसाधनों पर 2022-23 से 2024-25 तक के आंकड़ों के साथ जल, भूमि और वानिकी संसाधनों का लेखा-जोखा तैयार किया जाएगा। भारत ने 25 सितंबर, 2016 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव %सतत विकास एजेंडा 2030% पर हस्ताक्षर किए थे। इसके अंतर्गत प्राकृतिक संसाधन लेखांकन की तैयारी जरूरी है।

## यूरोप कार बाजार पर संकट

नई दिल्ली । यूरोप में कारों की ?बिक्री काफी कम हो गई है। पिछले महीने जून 2022 में यूरोप में कारों की बिक्री बीते 26 साल में सबसे कम रही। जून में यूरोप में सिर्फ 1.06 मिलियन कारें ही बिकीं। कुछ कार निर्माता ब्रैंड्स की ब्रिकी में तो 50 फीसदी तक गिरावट देखी गई। ये डेटा यूरोप ऑटोमोबाइल एसोसिएशन से मिले हैं। कारों की ब्रिकी में आई गिरावट का सबसे ज्यादा असर फॉक्सवैगन ग्रुप पर पड़ा। पिछले जून के मुकाबले इस जून में कंपनी की ब्रिकी एक चौथाई तक कम रही। वॉल्वो की भी ब्रिकी में जबरदस्त गिरावट देखी गई। कंपनी की ब्रिकी में 47.9 फीसदी का तगड़ा डाउनफॉल देखने को मिला। यह डाउनफाल जून महीने का है। वहीं ओवरआल पहली छमाही में वॉल्वो की ब्रिकी 28.5 फीसदी तक कम हुई। जैगुआर लैंड ग्रुप ग्रुप की जून में ब्रिकी सिर्फ 13.2 फीसदी कम हुई पर छमाही में जैगुआर की सेल भी जबरदस्त गिरी। पहले छमाही में 34.7 का बड़ा डाउनफॉल जैगुआर की सेल में आया है।

## एयरटेल ने बॉश फैसिलिटी में भारत का पहला निजी 5जी नेटवर्क स्थापित किया

**नई दिल्ली** । भारत के प्रमुख कम्युनिकेशन सॉल्यूशन्स प्रोवाइडर, भारती एयरटेल (÷एयरटेल÷) ने आज बेंगलुरू में बॉश ऑटोमोटिव इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (आरबीएआई) फैसिलिटी में भारत के पहले निजी 5जी नेटवर्क के सफल परीक्षण की घोषणा की। एयरटेल का ऑन-प्रिमाइसेस 5जी कैप्टिव प्राइवेट नेटवर्क दूरसंचार विभाग (डिपार्टमेंट ऑफ टेलीकम्यूनिकेशन) द्वारा आवंटित परीक्षण 5जी स्पेक्ट्रम पर बनाया गया। एयरटेल ने ट्रायल स्पेक्ट्रम का उपयोग करते हुए बॉश की अत्याधुनिक निर्माण सुविधा में क्वालिटी सुधारने और ऑपरेशनल एफिसियेंसी बढाने के लिए दो इंडस्ट्रियल ग्रेड यू? केस के जरिये लागू किया। दोनों ही मामलों में, मोबाइल ब्रॉडबैंड और अति विश्वसनीय लो-लेटेंसी संचार जैसी 5जी तकनीक ने ऑटोमेटेड ऑपरेशन को गति प्रदान की और डाउनटाइम को भी कम किया। बॉश फैसिलिटी में ट्रायल स्पेक्ट्रम पर स्थापित निजी नेटवर्क में मल्टी-जीबीपीएस थ्रूपुट प्रदान करने के साथ-साथ हजारों कनेक्टेड डिवाइसेज को मैनेज करने की क्षमता है। निजी 5जी नेटवर्क अधिक विश्वसनीयता, अधिक सुरक्षा वसुविधा प्रदान करता है और संचालन के लिए नेटवर्क के तारों पर निर्भरता से मुक्त करता है, ताकि बॉश को स्वचालित संचालन के लाभों को प्राप्त करने में सक्षम बनाया जा सके। किसी भी उत्पादन व्यवस्था में, गुणवत्ता और दक्षता आंकलन के लिए बहुत महत्वपूर्ण उपकरण हैं। परीक्षण के दौरान एयरटेल 5जी कैप्टिव प्राइवेट नेटवर्क के साथ, बॉश मैन्युफैक्चरिंग एक्ज़ीक्यूशन सिस्टम में स्वचालित ऑप्टिकल निरीक्षण (ऑटोमेटेड ऑप्टिकल इंस्पेक्शन) के माध्यम से गुणवत्ता का आकलन करने में लगने वाले समय को काफी कम करने में सक्षम रहा। बॉश मैन्युफैक्चरिंग एक्ज़ीक्यूशन सिस्टम (एमईएस) द्वारा वास्तविक समय में निर्णय लेने के लिए एआई/एमएल सर्वर पर अत्यधिक विश्वसनीय और सुरक्षित नेटवर्क पर डेटा के तेजी से हस्तांतरण को सुनिश्चित करके प्रक्रिया को कुशल बनाया गया। अत्यधिक तीव्रता, कम विलंबता, उच्च गति के साथ एयरटेल 5जी ने बॉश शॉप फ्लोर प्रबंधकों और ऑपरेटरों को वास्तविक समय में मुद्दों को पहचानने और हल करने में मदद की और इस प्रकार मीन टाइम टू रिपेयर (एमटीटीआर) और मीन टाइम बिटवीन फेल्योर (एमटीबीएफ) को कम किया। एयरटेल बिजनेस के डायरेक्टर व सीईओ अजय चितकारा ने कहा, ÷एयरटेल भारत के डिजिटल परिवर्तन और उद्यमों के विकास का सहयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है क्योंकि वे वैश्विक स्तर को प्राप्त करना चाहते हैं। हमारा मानना ??है कि एयरटेल के पास देश के किसी भी हिस्से में और किसी भी आकार के उद्यम के लिए कैप्टिव प्राइवेट नेटवर्क सॉल्यूशन देने के लिए विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचा, साझेदारी और विशेषज्ञता उपलब्ध है।

## बीते सप्ताह शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच गिरावट रही

मुंबई । बीते सप्ताह शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच गिरावट देखने को मिली। बाजार के जानकारों ने कहा कि कमजोर घरेलू और विदेशी संकेतों से बाजार में गिरावट आई। कमजोर होते रुपए, बढती महंगाई, मजबूत होते डॉलर और एफआईआई की बिकवाली बाजार पर दबाव बनाए हुए है। हालांकि मानसून की प्रगति और कच्चे तेल की कीमतों में आई गिरावट से शेयर बाजार को कुछ सहारा मिला है। चार दिन की गिरावट के बाद सप्ताह के आखिर में शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद हुआ। सप्ताह के पांच कारोबारी दिनों पर नजर डालें तो सप्ताह के पहले कारोबारी दिन सोमवार को बीएसई का 30 शेयरों का सूचकांक सेंसेक्स 330.14 अंक गिरकर 54,151.70 पर खुला और 86.61 अंक की गिरावट के साथ 54,395.23 अंक पर बंद हुआ। वहीं एनएसई निफ्टी 102.75 अंक फिसलकर 16,117.85 पर खुला और 4.60 अंक की मामूली गिरावट के साथ 16,216 अंक पर बंद हुआ। मंगलवार को सेंसेक्स 340.76 अंक गिरकर 54,054.47 पर खुला और 508.62 अंक लुढ़ककर 53,886.61 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी 72.65 अंक गिरकर 16,143.35 पर खुला और 157.70 अंक की गिरावट के साथ 16,058.30 अंक पर बंद हुआ।

बुधवार को सेंसेक्स 324.61 अंक बढ़कर 54,211.22 पर खुला और 372.46 अंक गिरकर 53,514.15 अंक पर बंद हुआ। एनएसई निफ्टी 750 अंक तक लुढ़क कर 53,514.15 पर बंद हुआ। गुरुवार को सेंसेक्स 239 अंक अंक बढ़कर 53,753.45 पर खुला और 98 अंक गिरकर 53,416.15 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी 74.7 अंक चढ़कर 16,041.35 पर खुला और 28 अंक गिरकर 15,938.65 पर बंद हुआ। शुक्रवार को सेंसेक्स 339.81 अंक बढ़कर 53,755.96 पर खुला 344.63 अंक चकर 53,760.78 पर बंद हुआ।

# नागिन 6 के नए सीजन में नियति फतनानी दिखाएंगी अपना जलवा

एकता कपूर अपनी सुपरनैचुरल सीरीज नागिन जल्द ही सीजन 6 के साथ वीकेंड के स्लॉट पर शानदार वापसी करने की तयारी कर रही है. कुछ महीने पहले वायरल हो रही खबरों के मुताबिक एकता ने रुबीना दिलैक को सीजन 6 की नागिन बनाने का फैसला लिया था. लेकिन ये खबरें सिर्फ एक अफवा थी. एकता ने रुबीना दिलैक नहीं बल्कि नजर एक्ट्रेस नियति फतनानी का इस सुपरहिट शो में मुख्य भूमिका निभाने के लिए चयन किया है. दरअसल नागिन 6 के नए सीजन के लिए ऑनलाइन ऑडिशन हो रहे हैं और नियति फतनानी का लीड किरदार निभाना लगभग तय होगया है. दरअसल सीरियल नजर में नियति ने सर्पिका का किरदार निभाया था इसलिए इनका पगडा बाकियों से भारी साबित हुआ है. नागिन का सीजन 4 और 5 टीआरपी पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाया था. बार बार हो रहा लॉकडाउन एक्टर को हुए कोरोना के चलते इन दोनों सीजनस मेकर्स ने जल्दी पैक अप कर दिया था. दरअसल नियति फतनानी का सीजन 5 के लिए भी विचार किया गया था लेकिन बाद में मेकर्स ने सुरभि चंदना और हिना खास जैसे बड़े चेहरों को फाइनल किया था. लेकिन लगता है नागिन के किरदार पर नियति का नाम लिखा था और इसलिए इतने जल्दी दोबारा उसे नागिन बनने का मौका मिल रहा है. वह भी इस किरदार को निभाने के लिए काफी ज्यादा एक्ससाइटेड है. नियति ने अपने करियर की शुरुआत बिग बॉस 14 के कंटेस्टेंट एजाज खान के साथ सोनी टीवी के मोह मोह के धागे सीरियल्स से की थी. नागिन सीरीज की बात करें तो अब तक मौनी रॉय, अदा खान, अनीता हसनंदानी, सुरभि ज्योति, निया शर्मा, सुभी चंदना, रश्मि देसाई, करिश्मा तन्ना, जैस्मीन भसीन और हिना खान जैसी कई मशहूर अभिनेत्रियों ने शो में अब तक नागिन का किरदार निभाया है. डेब्यू करते ही इस सीरियल ने टीआरपी के कई रिकॉर्ड्स तोड़ दिए थे।

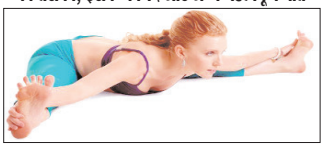

## उपविष्ठ कोणासनः जानिए इस योगासन के अभ्यास का तरीका, इसके फायदे और अन्य महत्वपूर्ण बातें



उपविष्ठ कोणासन को हठ योग का मध्यम कठिनाई वाला योगासन माना जाता है। योग विशेषज्ञों की मानें तो यह योगासन स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक आसनों में से एक है। अगर आप रोजाना सिर्फ 30 से 60 सेकेंड तक इसका अभ्यास करते हैं तो इससे आपको कई तरह के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभ मिल सकते हैं। आइए आज हम आपको उपविष्ठ कोणासन के अभ्यास का तरीका, इसके फायदे और इससे जुड़ी अन्य कुछ महत्वपूर्ण बातें बताते हैं।

### अभ्यास

**उपविष्ठ कोणासन के अभ्यास का तरीका:** सबसे पहले योगा मैट पर दंडासन की मुद्रा में बैठकर अपने दोनों पैरों को अच्छे से फैला लें। अब लंबी सांस भरते हुए धीरे-धीरे आगे की तरफ झुकें और फिर अपनी ठुड्डी को जमीन से सटा लें। इसके बाद सांस छोड़ते हुए अपने हाथों से पैरों के तलवों का मध्यम भाग पकड़ने की कोशिश करें।

### सावधानियां

**अभ्यास के दौरान जरूर बरतें ये सावधानियां:** इस आसन का अभ्यास थोड़ा कठिन है, इसलिए इसके हर स्टेप की तरफ धीरे-धीरे बढ़ें। पीठ के निचले हिस्से में दर्द होने पर यह आसन न करें। इस आसन के अभ्यास के दौरान पैरों को उतना ही फैलाएं, जितना आप आसानी से फैला सकें क्योंकि शारीरिक क्षमता से अधिक बल डालने के कारण पैरों में दर्द हो सकता है।

### फायदे

**उपविष्ठ कोणासन के रोजाना अभ्यास से मिलने वाले फायदे:** यह आसन पीठ, पैरों और हाथों की मांसपेशियों को मजबूती देता है। इससे पेट के अंदरूनी तंत्र को भी मजबूती मिलती है। यह आसन शरीर में जमी हुई अतिरिक्त चर्बी को कम करने में भी मदद करता है। यह रीढ़ की हड्डी को मजबूत और लचीला भी बनाता है। इससे फेफड़ों की कार्यक्षमता में सुधार होता है। इस आसन का किडनी पर भी सकारात्मक असर पड़ता है।

### टिप्स

**उपविष्ठ कोणासन के अभ्यास से जुड़ी खास टिप्स:** उपविष्ठ कोणासन दिखने में जितना आसान लगता है, उतना है नहीं। शुरुआत में इसका अभ्यास करते समय असुविधा महसूस हो सकती है, इसलिए इसका अभ्यास योग विशेषज्ञ की निगरानी में ही करें तो बेहतर होगा।

# 'तान्हाजी' फेम एक्ट्रेस नेहा शर्मा ने फैंस के दिलों को किया घायल

बॉलीवुड एक्ट्रेस नेहा शर्मा को फैंस तान्हाजी, क्रूक जैसी कई फिल्मों में फैंस देख चुके हैं. नेहा अपनी भोली सी सूरत से फैंस का दिल जीत लेती हैं. नेहा के फैंस उनके दीवाने हैं. ऐसे में नेहा भी आए दिन फैंस के सामने ग्लैमरस अदाएं दिखाती रहती हैं. हाल ही में नेहा ने अपने बोल्ड अंदाज से फैंस को हैरान किया है. नेहा ने सिर्फ बॉलीवुड में ही नहीं बल्कि साउथ इंडस्ट्री में काम किया है. नेहा शर्मा भागलपुर के कांग्रेस के विधायक अजीत शर्मा की बेटी हैं. लेकिन नेहा ने खुद की अब बॉलीवुड में एक खास पहचान बना ली है. नेहा शर्मा सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं. नेहा आए दिन सोशल मीडिया पर अपनी बोल्ड फोटोज से आग लगाती रहती हैं. नेहा का इंस्टाग्राम उनकी बोल्ड और बिकिनी लुक की फोटोज से भरा पड़ा है. फैंस को भी एक्ट्रेस का ये लुक काफी पसंद आता है. ऐसे में हाल ही में नेहा ने एक बार फिर से अपने हॉट अंदाज का जलवा सोशल मीडिया पर बिखेरा है. नेहा ने अपनी कुछ बिकिनी की फोटोज फिर से शेयर की हैं. इन फोटोज में एक्ट्रेस ने बिकिनी के ऊपर सर्ग पहना हुआ है. फोटोज में वह अलग अलग स्टाइल में पोज देती दिख रही हैं. इन फोटोज के साथ ही एक्ट्रेस ने एक वीडियो भी शेयर किया है, जिसमें वह ब्लैक कॉफी का मजा लेती दिख रही हैं. इन फोटोज और वीडियो के जरिए एक्ट्रेस ने साफ कर दिया है कि ये उनका थ्रोबैक अंदाज है. एक्ट्रेस की ये फोटोज सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रही हैं. नेहा के करियर की बात करें तो उन्होंने बॉलीवुड में मोहित सुरी की फिल्म 'क्रूक' से कदम रखा था. इसके बाद वह फिल्म 'तेरी मेरी कहानी', 'क्या सुपर कूल हैं हम', 'यमला पगला दीवाना', 'यंगिस्तान', 'कीर्ति', 'तुम बिन 2' 'तान्हाजी' जैसी कई बेहतरीन फिल्मों में नजर आ चुकी हैं. नेहा शर्मा बीते साल बिग बॉस 13 के विनर सिद्धार्थ शुक्ला के साथ एक म्यूजिक वीडियो में नजर आई थीं. यह गाना फैंस को बहुत पसंद आया था. दिल को करार आया गाने ने कई रिकार्ड अपने नाम किए थे।

# ओटीटी पर बड़े प्रोजेक्ट्स लाने की तैयारी में जुटे शाहरुख खान

बॉलीवुड के बादशाह शाहरुख खान लंबे समय से पर्दे पर दिखाई नहीं दिए हैं. उनकी अपकमिंग फिल्म 'पठान' की दर्शक बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं. इस बीच खबर है कि इस साल शाहरुख अपने फैंस को कई बड़े सरप्राइज दे सकते हैं. किंग खान पहले ही ओटीटी पर बतौर प्रोड्यूसर एंट्री कर चुके हैं. अपनी प्रोडक्शन कंपनी रेड चिलीज एंटरटेनमेंट के तहत ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए कई प्रोजेक्ट्स पहले बना चुके हैं. शाहरुख खान फिल्म 'जीरो' के बाद 'पठान' में काम कर रहे हैं. दोनों फिल्मों के बीच खासा गैप है. ऐसा नहीं है कि कोरोना महामारी के बीच लगे



लॉकडाउन में एक्टर शांति से बैठे हैं. खबर है कि 'पठान' फिल्म के रिलीज होते-होते शाहरुख द्वारा कुछ नए प्रोजेक्ट्स ओटीटी पर दिख सकते हैं. मिली खबरों के मुताबिक अपने प्रोडक्शन हाउस के तहत ओटीटी प्रोजेक्ट्स फाइनल करने में जुटे हुए हैं. हालांकि शाहरुख खान पहले ही रेड चिलीज एंटरटेनमेंट के बैनर तले 'बेताल', 'क्लास ऑफ 83', 'बार्ड ऑफ ब्लड' जैसी वेब सीरीज बना चुके हैं. ओटीटी पर बढ़ते दर्शकों की संख्या को देखते हुए अब अधिक से अधिक प्रोजोक्ट्स बनाने की तैयारी में जुटे हुए हैं. शाहरुख खान के वर्कफ्रंट की बात करें तो इनकी अपकमिंग फिल्म पठान है।

## 'बिग बॉस 15' में नजर आएगी दिव्यांका त्रिपाठी-विवेक दहिया की जोड़ी?

दिव्यांका त्रिपाठी, एक तरफ 'खतरों के खिलाड़ी 11' की शूटिंग कर रही हैं तो वहीं दूसरी ओर उन्हें सलमान खान के रियलिटी शो 'बिग बॉस 15' का भी ऑफर मिला है। बताया जा रहा है कि बिग बॉस के मेकर्स ने दिव्यांका और उनके पति विवेक दहिया को अप्रोच किया है। रिपोर्ट के मुताबिक, 'बिग बॉस 15' अक्टूबर में ऑन-एयर किया जाएगा और मेकर्स इसके लिए तैयारियों में जुट गए हैं। 'बिग बॉस 14' खत्म होने के तुरंत बाद ही मेकर्स ने 15वें सीजन के लिए रजिस्ट्रेशन प्रोसेस शुरू कर दी थी और बताया था कि नए सीजन में कॉमनर्स भी हिस्सा ले सकते हैं। सूत्रों ने बताया कि 'बिग बॉस 15' में मेकर्स कपल्स और एक्स-कपल्स को साथ लाने का प्लान बना रहे हैं ताकि शो में और भी ड्रामा लाया जा सके और उसे मसालेदार बनाया जा सके। सिलेब्रिटी कपल्स के अलावा आने वाले सीजन में कुछ कॉमनर्स भी शामिल होंगे। अभी तक कुछ सिलेब्रिटी कपल्स को अप्रोच किया गया है, जिनमें से एक कपल दिव्याकां त्रिपाठी और विवेक दहिया भी हैं। बताया जा रहा है कि दोनों ने 'बिग बॉस 15' में अपनी दिलचस्पी दिखाई है। हालांकि अभी तक दिव्यांका और विवेक ने 'बिग बॉस 15' के लिए हामी नहीं भरी है, सिर्फ बातचीत चल रही है।



# दिल्ली से मुंबई जाने के अनुभव ने 'रानी' को समझने में की मदद: हुमा कुरैशी

अभिनेत्री हुमा कुरैशी का कहना है कि आगामी वेब सीरीज 'महारानी' में रानी भारती की भूमिका निभाना रोमांचक था। वह कहती हैं कि अभिनेत्री बनने के लिए दिल्ली से मुंबई जाना एक ऐसा अनुभव था जिसने उन्हें 'रानी' को समझने में मदद की। रानी एक अनपढ़ गांव की महिला है, जो बाहर की दुनिया की अधिकांश चीजों से बेखबर है, और फिर भी वह भाग्य के एक मोड़ के बाद खुद को बिहार की राजनीति के केंद्र में पाती है और राज्य की मुख्यमंत्री बन जाती है। राजनीति की दुनिया के बारे में रानी की अज्ञानता की तरह हुमा कहती हैं कि उन्हें भी पता नहीं था कि जब वह बड़ी हो रही थीं तो बॉलीवुड का हिस्सा बनने का क्या मतलब था। उन्होंने बताया कि रानी भारती ने कभी अपने गांव से बाहर कदम नहीं रखा है। उनका किरदार निभाना एक बड़ी चुनौती थी। वह मेरे बिल्कुल विपरीत हैं। वह रोमांचक हिस्सा था। अगर आप कुछ जानते हैं, तो क्या आप उसे भूल जाते हैं? नहीं पर यह मजेदार और चुनौतीपूर्ण था। लुक और पोशाक ने भी वास्तव में काफी मदद की है। हुमा ने कहा कि दिल्ली से मुंबई जाना एक महत्वपूर्ण मोड़ रहा है। इसने मेरी जिंदगी को पूरी तरह से बदल दिया। मैं दिल्ली में एक अलग जीवन जी रही थी। मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह वह दुनिया थी जिसकी मैं थी। मैं दिल्ली में पली बढ़ी हूं, मेरे दोस्त भी हैं वहाँ। मैंने कुछ ऐसा बनने की हिम्मत की जो मुझे बताया गया था कि मैं नहीं बन सकती हूं। मेरे और मेरे परिवार के लिए मेरा एक अलग शहर में जाना एक बड़ा बदलाव था। वह कहती हैं कि वास्तव में, सोशल मीडिया ने भी बड़ी मदद की है। उन्होंने कहा कि इस महामारी ने हमें सबसे बुरा समय दिखाया है। यह दिल दहला देने वाला और चैंकाने वाला है। इस महामारी ने हमें मानवता भी दिखाई है। इतने सारे लोगों ने सोशल मीडिया का इस्तेमाल लोगों की मदद करने, किसी को बिस्तर दिलाने, प्लाज्मा पाने के लिए किया है। मैंने इंसानों की अच्छाई देखी है।

# सिलाई मशीन का इस्तेमाल करते समय होने वाली सामान्य समस्याएं और उनके समाधान

अगर सिलाई मशीन नई हो तो वह कुछ दिनों तक तो ठीक से काम करती है, लेकिन कुछ समय के बाद ही इसमें छोटी-छोटी समस्याएं आने लगती हैं। ऐसा होने पर कई लोग मशीन को ऐसे ही छोड़ देते हैं और बाहर से कपड़े सिलवाना शुरू कर देते हैं। आइए आज हम आपको सिलाई मशीन के इस्तेमाल से जुड़ी कुछ सामान्य समस्याएं और उनके समाधान बताते हैं ताकि आप अपनी सिलाई मशीन को खुद ठीक करके इसका इस्तेमाल कर सकें।

**समस्या- सुई का बार-बार टूटना:** अगर आपकी सिलाई मशीन की सुई बार-बार टूट जाती है तो हो सकता है कि आप गलत सुई का इस्तेमाल कर रहे हों। दरअसल, सिलाई मशीन में सुई की सेटिंग कपड़े के हिसाब से बदलनी पड़ती है। आजकल मार्केट में 8 से 18 नंबर तक की सुई मौजूद हैं। नाजुक और हल्के कपड़े के लिए 9 से 11 नंबर की सुई का इस्तेमाल करना चाहिए, वहीं वजनदार कपड़े के लिए 14 से 18 नंबर की सुई बेहतर होती हैं।

**समस्या- धागे का बार-बार टूटना:** कई लोगों को इस समस्या का सामना करना पड़ता है और इसके दो मुख्य कारण हो सकते हैं। पहला, सिलाई मशीन में डाला गया धागा कच्चा हो। दूसरा, आपने काफी समय से अपनी सिलाई मशीन का इस्तेमाल न किया हो क्योंकि इसके कारण धागे में धूल जम जाती है और धागा कमजोर हो जाता है। इस समस्या से बचने के लिए बेहतर होगा कि आप सिलाई मशीन को समय-समय पर साफ करते रहें और मजबूत धागे का इस्तेमाल करें।

**समस्या- मशीन का भारी चलना:** अगर आपको कभी भी सिलाई मशीन चलाते समय काफी जोर लगाना पड़े यानि आपको लगे कि आपकी मशीन चलने में काफी भारी हो गई तो आपको इसे ठीक कराने के लिए किसी रिपेयरिंग वाले को बुलाने की जरूरत नहीं है। इसे आप खुद भी ठीक कर सकते हैं। इसके लिए बस मशीन के शटल केस के दोनों पेच थोड़े ढीले कर दें और समय-समय पर मशीन के शटल केस की सफाई पर भी ध्यान दें।

**समस्या- सिलाई बंद हो जाना:** सिलाई मशीन का इस्तेमाल करने वाले लोगों को अक्सर इस समस्या का सामना करना पड़ता है।

## मैं सिर्फ एक तरीके का काम करने वाली अभिनेत्री नहीं हूं : नारायणी शास्त्री

शो आपकी नजरों ने समझा में राजवी रावल की भूमिका निभा रहीं अभिनेत्री नारायणी शास्त्री का कहना है कि वह कभी एक तरीके की अभिनेत्री नहीं रही हैं और उन्हें पर्दे पर सहज होना पसंद है। उन्होंने बताया, राजवी रावल एक आत्मविश्वासी, मिलनसार और मजबूत इंसान हैं जो आस्तीन पर अपना दिल रखती हैं। वह हमेशा अपने बेटों के लिए अपना प्यार दिखाती हैं। उनका परिवार उनके लिए सब कुछ है। एक व्यक्ति के रूप में, वह बहुत निष्पक्ष हैं और उनमें बहुत ईमानदारी है। मैं एक ढंग वाली अभिनेत्री नहीं हूं। मैं अपने किरदार के व्यक्तित्व को समझने के बाद अनायास ही चीजें करती हूं। अभिनेता विजयेंद्र कुमेरिया शो में उनके बेटे की भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने कहा, विजयेंद्र के साथ काम करना आसान है। वह बहुत ही पेशेवर है, हमेशा अपनी पंक्तियों के साथ तैयार रहते हैं और सुझावों के लिए खुले रहते हैं। वह मुझसे दर्श के रूप में मिले, न कि विजयेंद्र, जिसने हमारी केमिस्ट्री को वैसा ही बना दिया। इंडस्ट्री में अपने सफर के बारे में बात करते हुए एक्ट्रेस का कहना है कि उन्हें कोई शिकायत नहीं है। वह कहती हैं मैंने मस्ती भरा एक खूबसूरत सफर तय किया है। मैंने वह सब कुछ किया जो मैं करना चाहती थी और मुझे कोई पछतावा नहीं था। यात्रा में उतार-चढ़ाव थे लेकिन यह मजेदार है। मैं सभी अवसरों से खुद को धन्य महसूस करती हूं।

## असंसदीय शब्दः फिजूल की बहस

संसद के भाषणों में कौन-से शब्दों का इस्तेमाल सांसद लोग कर सकते हैं और कौन-से का नहीं, यह बहस ही अपने आप में फिजूल है। आपत्तिजनक शब्द कौन-कौन से हो सकते हैं, उनकी सूची 1954 से अब तक कई बार लोकसभा सचिवालय प्रकाशित करता रहा है। इस बार जो सूची छपी है, उसे लेकर कांग्रेस के नेता आरोप लगा रहे हैं कि इस सूची में ऐसे शब्दों की भरमार है, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के लिए विपक्षी सांसदों द्वारा इस्तेमाल किए जाते हैं। जैसे जुमलाजीवी, अहंकारी, तानाशाही आदि। दूसरे शब्दों में संसद तो पूरे भारत की है लेकिन अब उसे भाजपा और मोदी की निजी संस्था का रूप दिया जा रहा है। विरोधी नेताओं का यह आरोप मोटे तौर पर सही-सा लगता है लेकिन वह अतिरंजित है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने साफ़-साफ़ कहा है कि संसद में बोले जानेवाले किसी भी शब्द पर प्रतिबंध नहीं है। सभी शब्द बोले जा सकते हैं लेकिन अध्यक्ष जिन शब्दों और वाक्यों को आपत्तिजनक समझेंगे, उन्हें वे कार्रवाई से हटवा देंगे। यदि ऐसा है तो इन शब्दों की सूची जारी करने की कोई तुक नहीं है, क्योंकि हर शब्द का अर्थ उसके आगे-पीछे के संदर्भ के साथ ही स्पष्ट होता है। इस मामले में अध्यक्ष का फैसला ही अंतिम होता है। कोई शब्द अपमानजनक या आपत्तिजनक है या नहीं, इसका फैसला न तो कोई कमेटी करती है और न ही यह मतदान से तय होता है। कई शब्दों के एक नहीं, अनेक अर्थ होते हैं। 17 वीं सदी के महाकवि भूषण की कविताओं में ऐसे अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग देखने लायक है। भाषण देते समय वक्ता की मन्शा क्या है, इस पर निर्भर करता है कि उस शब्द का अर्थ क्या लगाया जाना चाहिए। इसी बात को अध्यक्ष ओम बिड़ला ने दोहराया है। ऐसी स्थिति में रोज़ाना प्रयोग होनेवाले सैकड़ों शब्दों को आपत्तिजनक की श्रेणी में डाल देना कहां तक उचित है? जैसे जुमलाजीवी, बालबुद्धि, शकुनि, जयचंद, चांडाल चौकड़ी, पिट्ठू, उचक्का, गुल खिलाए, दलाल, सांड, अंट-संट, तलवे चाटना आदि! यदि संसदीय सचिवालय द्वारा प्रचारित इन तथाकथित 'आपत्तिजनक' शब्दों का प्रयोग न किया जाए तो संसद में कोई भी भाषण पूरा नहीं हो सकता। इसीलिए इतने सारे शब्दों की सूची जारी करना निरर्थक है। हां, सारे सांसदों से यह कहा जा सकता है कि वे अपने भाषणों में मर्यादा और शिष्टता बनाए रखें। किसी के विरुद्ध गाली-गलौज, अपमानजनक और अश्लील शब्दों का प्रयोग न करें। जिन शब्दों को 'असंसदीय' घोषित किया गया है, उनका प्रयोग हमारे दैनंदिन कथनोपकथन, अखबारों और टीवी चैनलों तथा साहित्यिक लेखों में बराबर होता रहता है। यदि ऐसा होता है तो क्या यह संसदीय मर्यादा का उल्लंघन नहीं माना जाएगा? इस तरह की सूची प्रकाशित करके क्या संसद अपनी प्रतिष्ठा को हास्यास्पद नहीं बना रही है? भारत को ब्रिटेन या अमेरिका की नकल करने की जरुरत नहीं है। ये राष्ट्र आपत्तिजनक शब्दों की कोई सूची जारी करते हैं तो क्या हम भी उनकी नकल करें, यह जरुरी है? इस मामले में हमारे सत्तारुढ़ और विपक्षी नेता एक फिजूल की बहस में तू-तू-मैं-मैं कर रहे हैं।

# संविधान में आस्था के निहितार्थ

राकेश कुमार वर्मा

संविधान के प्रतिकूल अभिव्यक्ति पर हाल ही में केरल के साजी चेरियन को मंत्री पद त्यागना पड़ा। उल्लेखनीय है कि सूबे के मल्लापल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने भारत के संविधान को ब्रिटिश शासन द्वारा संकलित जनशोषक दस्तावेज बताया। कोरोना महामारी पर उत्पादन ठप्प होने के बावजूद अम्बानी अडानी जैसी बड़ी कंपनियों का बढ़ता मुनाफा और गरीबतर होती जनता के मूलभूत संकट पर सरकार की नीतियों से असहज होकर ही शायद चेरियन ने कहा कि ''भारतीय संविधान श्रमिकों के शोषण को सबसे अधिक क्षमा करता है।'' लेकिन इससे पूर्व केंद्र के एक मंत्री अनंत कुमार हेगड़े ने जब ब्राहमण युवा परिषद के एक सम्मेलन में संविधान के बुनियादी मूल्य धर्मनिरपेक्षता का मजाक उड़ाते हुए 'संविधान बदलने के इरादे से सत्ता में आने का मंतव्य बताया तब सत्ताधारी पार्टी ने मौन साध लिया। शिवपुरी से जिलाधीश स्तर की हैसियत रखने वाले एक अधिकारी ने लोकतंत्र पर्व पर मतदान को लेकर अपना विरोध दर्ज कराया। शायद आजादी के बाद विकास के नाम पर जनता की गाढ़ी कमाई को मनमाने ढ़ंग से खर्च करने के बाद भी असहाय परिजन द्वारा मृतक को ठेले पर ले जाने जैसी विवशता के साथ ही समय-समय पर खुलती भ्रष्टाचार की कलई से यह आक्रोश फूटा हो। यह कटु वास्तविकता है कि संविधान की धारा 21 जो जीवन एवं व्यक्तिगत आजादी की सुरक्षा के अधिकार की बात करती है उस पर अविश्वास की परतें चढ़ती जा रही हैं। वीर सावरकर भी भारतीय संविधान के कटु आलोचक रहे। उन्होंने लिखा- 'भारत के नए संविधान के बारे में सबसे ज्यादा बुरी बात यह है कि इसमें कुछ भी भारतीय नहीं है।' संविधान सभा में नेहरू जी द्वारा 13 दिसंबर 1946 को प्रस्तुत उद्देश्य प्रस्ताव पर चर्चा करते हुए जयपाल सिंह ने कहा - ÷मुझे अपने जंगली होने पर गर्व है- यही वह संबोधन है जो हमें देश के उस हिस्से(आदिवासी अंचल) के लिए दिया जाता है। यह प्रस्ताव आदिवासियों को प्रजातंत्र नहीं सिखा सकता अपितु, आपको उनसे प्रजातांत्रिक तौर तरीके सीखने होंगे। संविधान से अपनी गहरी असहमति व्यक्त करते हुए माधवराव सदाशिव गोलवलकर 'गुरूजी' ने लिखा- हमारा संविधान पूरे विश्व के विभिन्न संविधानों के विभिन्न आर्टिकल्स की एक बोझिल और बेमेल जमावट है। इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे अपना कहा जा सके। क्या इसके मार्गदर्शक सिद्धांतों में इस बात का कहीं भी उल्लेख है कि हमारा राष्ट्रीय मिशन क्या है और हमारे जीवन का मूल राग क्या है उल्लेखनीय है कि तात्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संविधान समीक्षा के नाम पर आयोग का गठन किया था। यह दीगर बात है कि पूर्ण बहुमत के अभाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार जस्टिस वेंकटचलैया आयोग वाली संविधान समीक्षा के प्रस्तावों को सदन में रखने का साहस नहीं जुटा सकी।

दरअसल संविधान पर अनास्था का यह अध्याय इसके निर्माण के साथ ही शुरू हो गया था जब इसके निर्माता डॉ. भीमरॉव अंबेडकर ने इसके दहन की इच्छा व्यक्त की। 2 सितंबर 1953 को राज्यसभा में चर्चा के दौरान उन्होंने कहा था - 'मैं यह कहने के लिए पूरी तरह तैयार हूं कि संविधान को जलाने वाला मैं पहला व्यक्ति होऊंगा।' दो वर्ष पश्चात पंजाब से राज्यसभा सदस्य डॉ. अनूप सिंह ने 19 मार्च 1955 को जब सदन में चर्चा के दौरान डॉ अंबेडकर को उनके कथन का स्मरण दिलाया तो डाक्टर साहब ने स्पष्ट करते हुए कहा कि हमने भगवान के रहने के लिए संविधानरूपी मंदिर बनाया है, परंतु, उससे पहले राक्षस आकर उसमें रहने लगे हैं। ऐसे में मंदिर तोड़ देने के अलावा कोई विकल्प नही। इस पर अन्य सदस्य वीकेपी सिन्हा ने सुझाव दिया कि आप उन्हें निकाल क्यों नहीं देते÷ इस पर शतपथ वर्णित देवासुर संग्राम का उदाहरण देते हुए बाबासाहेब ने अपनी असमर्थता व्यक्त की। हालांकि शोषितों की सुरक्षा को लेकर चिन्तित डॉ अंबेडकर ने 8 अगस्त, 1930 को सत्ता से मुक्त होने का अपना राजनीतिक लक्ष्य दुनिया के सामने रखा। उन्होंने कहा, ÷मौजूदा राजनीति शोषितों की समस्याएं हल नहीं कर सकतीं अतएव समाज मे

उचित स्थान बनाने के लिए हमें स्वयं शिक्षित होने के साथ ही परिवर्तित जीवनशैली का मार्ग अपनाना होगा। अछूत समाज मे बढ़ती लोकप्रियता एवं जनसमर्थन के चलते उन्हें 1931 मे लंदन में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए बुलाया गया। परिणामतः रूढ़िवादी हिंदुओं और कांग्रेस में उनकी छवि खलनायक सी बन गई। वर्ष 1948 में भारत में अंतरिम सरकार का गठन होने के बाद संविधान निर्माण परिषद बनाई गई। संविधान बनाने के लिए एशियाई देशों के संविधान विशेषज्ञ आयुस जेनिस के आमंत्रण प्रस्ताव पर महात्मा गांधी ने जवाहरलाल नेहरू और सरोजनी नायडू गांधी को डॉ. अंबेडकर का नाम सुझाया। इस तरह 29 अगस्त 1947 को डॉ. अंबेडकर संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष बनाए गए। लेकिन संविधान बनाने की स्वतंत्रता की बजाय उन पर नेहरू और सरदार पटेल का दबाव बना रहा। मौलिक अधिकारों की कमेटी के अध्यक्ष खुद जवाहरलाल नेहरू थे, जिसमे अंबेडकर को सदस्य तक नहीं बनाया गया। वास्तविकता से परिचित महात्मा गांधी ने इस संबंध में कहा था, ÷मेरी कहां चलती है कौन बात मानता है÷ इसलिए डॉ. अंबेडकर को संविधान जलाने की बात कहनी पड़ी।

अंततः 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा ने संविधान अपना लिया। संविधान सभा में डिबेट समाप्त करते हुए डॉ. अंबेडकर ने कहा, '26 जनवरी, 1950 को हम अंतर्विरोधों के जीवन में प्रवेश करेंगे। राजनीति में समानता होगी, परंतु सामाजिक और आर्थिक जीवन में असमानता बरकरार रहेगी। अगर लंबे समय तक ऐसा किया गया तो लोकतंत्र खतरे में पड़ जाएगा इसलिए, हमें यथाशीघ्र यह अंतर्विरोध खत्म करना होगा, वरना असमानता से पीड़ित लोग उस राजनैतिक लोकतंत्र की संरचना को ध्वस्त कर देंगे, जिसे मुश्किलों से तैयार किया गया है। संविधान दिवस पर गत वर्ष प्रधानमंत्री ने कहा कि - हमारा संविधान सहस्त्रों वर्ष की महान परंपरा, अखंड धारा की आधुनिक अभिव्यक्ति है जो संविधान की प्रेरणाओं और मूल तत्वों के स्वदेशी उद्गम की ओर संकेत करता है। हाल ही में विभिन्न न्यायाधीशों द्वारा न्याय प्रणाली के भारतीयकरण की मांग उठाई गई है। उच्चतम न्यायालय न केवल नागरिकों के मूल अधिकारों की रक्षा करता है अपितु यह संविधान का संरक्षक भी है। संविधान के उपबंध की व्याख्या के विषय में अंतिम निर्णय देने का अधिकार भारत के उच्चतम न्यायालय को ही प्राप्त है। अगर न्याय प्रणाली के भारतीयकरण की शुरुआत करनी है तब सबसे पहले राजद्रोह कानून(1870),धारा 124 ए जैसे औपनिवेशिक मानसिकता से संबंधित कानूनों को खत्म करना चाहिए, क्योंकि सरकार इसका दुरुपयोग असहमत स्वरों के दमन के लिए कर रही है।

देश की लोकतांत्रिक प्रणाली में धन-बल, भुजबल और राजकीय निगरानी संस्थाओं के बल से चुनी हुई सरकारें आज की बड़ी चुनौती बन गई हैं। विधानसभा चुनाव की आहट पाते ही सत्ता के रक्त का स्वाद चख चुके अवसरवादी सत्तासीन दल असंतुष्टों की मदद से चुनाव के नियमों-उपनियमों में सेंध, मीडिया का दुरूपयोग जैसे षड़यंत्रकारी कूटनीति से समर्थ सरकार को गिराने में सफल रहे है।

## कर्तव्य को बनाएं सर्वोपरि लक्ष्य

अध्यापक ने विद्यार्थियों से पूछा- 'रामायण और महाभारत में क्या अंतर है?' विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार उत्तर दिए। अध्यापक को संतोष नहीं हुआ। एक विद्यार्थी ने अनुरोध किया- 'आप ही बताइए' अध्यापक बोला-रामायण और महाभारत में सबसे बड़ा अंतर है 'हक-हकूक' का। रामायण में राम ने अपना अधिकार छोड़ा, राज्य छोड़ा और चौदह वर्षों तक वन में जाकर रहे। वे चाहते तो अधिकार के लिए लड़ाई कर सकते थे। दशरथ उन्हें वन में नहीं भेजना चाहते थे। अयोध्या की जनता उनके वन-गमन से व्यथित थी। पर राम ने अपने कर्तव्य को अधिकार से ऊपर रखा। पिता के कहे का पालन उनके जीवन का महान आदर्श था। महाभारत का संपूर्ण कथानक अधिकारों की लड़ाई का कथानक है। कौरव और पांडव आपस में चचेरे भाई थे। भाई-भाई के रिश्तों में जो गंध होती है, मिठास होती है, अपनापा होता है, उसका दर्शन ही वहां कहां होता है! पांडव सब कुछ जुए में हार गए। सब वादे पूरे कर वे लौटे तो दुर्योधन ने पांच गांव तो क्या, सूई की नोक के बराबर भूमि भी देने से मना कर दिया। ये दो उदाहरण हैं-हमारे सामने। प्रथम उदाहरण अपनेपन से भरे आत्मीय संबंधों का है। यह संबंधों की मधुरता व्यक्ति को कभी आत्मकेंद्रित नहीं होने देती। वह अपने बारे में नहीं सोचता; परिवार, समाज और देश के बारे में सोचता है। उसका अपना कोई स्वार्थ होता ही नहीं। पद-प्रतिष्ठा और सुख-सुविधा के संस्कारों से वह ऊपर उठ जाता है। ऐसा वही व्यक्ति कर सकता है, जो कर्तव्य को अपने जीवन का सवरेपरि लक्ष्य मानता है।

## जब शेर को मिला सवासेर...?

प्रभुनाथ शुक्ल

हमारा लोकतंत्र कितना समदर्शी है। यहाँ इंसान की परेशानी और चिंताओं के साथ शेर, बाघ, मोर, घोड़े, गदहे भी गंभीर चिंतन का विषय बन जाते हैं। मीडिया की कृपा विशेष रूप से सोशलमिडिया की वजह से यह बहस सर्वव्यापी बन जाती है। जब बात राष्ट्रीय प्रतिकों और प्रतिमानों से जुडी हो तो यह और गंभीर हो जाता है।आजकल शेर और सवाशेर का प्रतीक सुर्खियों में है। अब आप ही बताइए क्या शेर से शांति की उम्मीद की जा सकती है। उस हालत में जब इंसान खुद आदमखोर बन गया है फिर वह शेर से शांत और विनम्र बनने की उम्मीद भला कैसे कर सकता है।

अब एक जमात शेर को गीदड़ बनाना चाहती है। आँगन कुटी में रहने वाले निंदक शेर को सवा शेर बनते नहीं देखना चाहते हैं। वह उसे गीदड़ बनाने पर तुले हैं। अब उन्हें कौन बताए वह खुद की भांति शेर को भी बनाना चाहते हैं। इसी शांतिपाठ में खुद का राज सिंहासन खाली हो गया और अब मेमना बने फिर रहे हैं फिर भी शेर से कह रहे हैं कि तुम हमारे जैसे नहीं हो। अब तुम गुर्राने और चिंघाड़ने लगे हो। तुम और बड़े हो गए हो जिसकी वजह से तुम्हारी दहाड़ हमें डराने लगी है। वे अपनी तरह बेचारे शेर को नख और दंतविहीन बना देना चाहते हैं। उसे शेर नहीं सियार बनाकर रखना चाहते हैं। क्योंकि वह शेर कि खाल को खुद ओढ़कर शेर बनना चाहते हैं। इसलिए शेर से वे मूल स्वभाव त्यागने की बात कर रहे हैं। यह तो अच्छी बात नहीं हुई।

एक जमात है जो सिर्फ बात का बतंगड़ बनाती है। उन्हें अपच की बीमारी है। अब राष्ट्रीय प्रतीक शेर भी मुद्दा बन गया है। शेर दो खेमों में बंट गया है। सवाल शेर का नहीं उसके स्वभाव का है। वे सत्ता पर हमेशा सवा शेर की भूमिका में रहना चाहता है, लेकिन हाल के दिनों में उनका मौसम का हाल बेहाल है। सत्ता का शेर, सवाशेर बन गाया है जिसकी वजह से उनकी की चिंता बढ़ गयी है। क्योंकि अभी तक शेर बेहद शांत, सौम्य और उदार मुद्रा में था, लेकिन अब वह आदमखोर शैली में आ गया है। जिसकी वजह से पड़ोसियों का हाजमा गड़बड़ हो गया है। उनकी चिंता

बेगारी, महंगाई और आतंकवाद नहीं है। उनकी परेशानी अब शेर का प्रतीक है। क्योंकि हम प्रतीकों के आदि हो चुके हैं। हम जमीन से नहीं प्रतीकों से जुड़े हैं। इसलिए प्रतीकों में परिवर्तन भी हमें डराते हैं।

आप क्या शेर को हमेशा गीदड़ बनाकर रखना चाहते हैं।आपकी शांति, शौर्य और उदारता की सीख ने उसे अब तक बिना दंत और नख के रखा था। उसकी मूल आजादी को आपने छीन लिया था। तभी हमारे आसपास के गीदड़ भी गुर्राने लगे थे । उसे खा जाने की धमकी देने लगे थे। अभी तो उसे जंगली आजादी मिली है। अब वह गीदड़ों की हूआंहूआं से नहीं डरता। अब वह खूंखार और आदमखोर मुद्रा में है। कभी उसकी दहाड़ को नजर अंदाज करने वाले लोग अब उसकी एक खांसी को भी दहाड़ समझ नतमस्तक हैं। शेर अब अपनी जंगली सभ्यता यानी प्राकृतिक स्वभाव की तरफ लौट आया है। आपने बचपन में कभी एक कहानी पढ़ी होंगी जिसमें शेर की नाक पर चूहा नाचता था। वह एक वक्त था जब शेर खुद को शेर होना भूल गया था। लेकिन अब उसकी स्मृति लौट आयी है। अब उसे दहाड़ने दीजिए।

शेर जंगल का राजा है। उसकी छवि एक कुशल प्रशासक और निर्भीक, निडर राजा की है। जिसकी वजह से जंगल में भी जंगल का कानून लागू नहीं होता। शेर अपनी इसी छबि की वजह से जंगल में लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम रखता है। अगर वह मूल स्वभाव को बदल दे तो जंगल में अराजकता फैल जाएगी। जंगल का कुशल प्रशासन अकुशल लोगों के हाथों में चला जाएगा। कानून व्यवस्था कि किसी को परवाह ही नहीं रहेगी। सब अपनी मर्जी के मालिक हो जाएंगे। गीदड़ों के हाथ में शासन व्यवस्था चली जाएगी। पड़ोसी जंगल के चूहे भी शेर की नाक पर ताता-थैया करने लगेंगे। फिर शेर का शेर होना भी बेमतलब साबित होगा। हम मानते हैं आपकी बात कि हमारा पहला शेर उदार, सौम्य,अहिंसक और शांत था। उस दौरान उसका बाल्यकाल यानी शैशवाकाल था। लेकिन अब वह जवान, शक्तिशाली हो चला है। अब उसके दहाड़ने और गुर्राने का वक्त है। बदले हालात में अपनी शक्ति और शौर्य को प्रदर्शित करने की भी जरूरत है। अब उसकी दहाड़ की गूंज जंगली सभ्यता वालों तक भी पहुंचने लगी है।

# राजपक्षे की अदूरदर्शिता

सिद्धार्थ शंकर

श्रीलंका में आर्थिक तबाही के बाद भड़के जन विद्रोह के बीच राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे बुधवार तड़के कोलंबो से भाग निकले। श्रीलंका की वायुसेना के विमान से अपनी पत्नी व अंगरक्षकों के साथ मालदीव की राजधानी माले पहुंच गए। आज ही वे इस्तीफा देने वाले थे, लेकिन उससे पहले वह देश छोड़कर चले गए। श्रीलंका के पीएम कार्यालय ने भी पुष्टि की है कि राजपक्षे देश छोड़कर चले गए हैं। गोटबाया के श्रीलंका छोड़ने के बाद बड़ा राजनीतिक संकट खड़ा हो गया है। श्रीलंका में राष्ट्रपति का वही ओहदा या अधिकार होता है जो भारत में प्रधानमंत्री का। भ्रष्टाचार और अर्थव्यवस्था संभालने में विफल रहने के कारण श्रीलंका में कई महीनों से बवाल जारी था। बीते दिनों जनता सड़कों पर उतर आई और सैकड़ों लोग राष्ट्रपति भवन में घुस गए थे। उसके बाद से राजपक्षे लापता थे। इसी बीच उन्होंने एलान किया था कि वे 13 जुलाई को पद छोड़ देंगे। खबर है मिक राजपक्षे के भाई व पूर्व वित्त मंत्री बासिल राजपक्षे ने भी श्रीलंका छोड़ दिया है। 71 साल के बासिल को श्रीलंका की आर्थिक बदहाली का बड़ा जिम्मेदार बताया जा रहा है। राष्ट्रपति राजपक्षे ने श्रीलंका की संसद स्पीकर महिंदा यापा अभयवर्धने और प्रधानमंत्री रानिल

विक्रमसिंघे दोनों को सूचित किया था कि वे 13 जुलाई को इस्तीफा दे देंगे। स्पीकर अभयवर्धने को बुधवार को राष्ट्रपति राजपक्षे के इस्तीफे की घोषणा करने की उम्मीद थी। इस बीच, श्रीलंका के राजनीतिक दलों ने सर्वदलीय सरकार बनाने के प्रयास तेज कर दिए हैं। इसके बाद दिवालिया हो चुके देश को अराजकता से बचाने के लिए 20 जुलाई को नए राष्ट्रपति के चुनाव का फैसला किया है। अब श्रीलंका में भविष्य में कुछ भी हो, मगर अभी तो दुनिया के लोकतांत्रिक इतिहास में दर्ज हो गया कि पहली बार निहत्थी जनता ने सड़कों पर आकर, विधिवत एक निर्वाचित सरकार को उखाड़ फेंका, राष्ट्रपति भवन पर कब्जा किया और प्रधानमंत्री आवास को फूंक डाला। श्रीलंका की जनता ने पिछले मई में देश के सर्वशक्तिमान राजपक्षे परिवार के प्रधानमंत्री महिंदा राजपक्षे को जान बचाकर भागने और नौसैनिक अड्डे पर शरण लेने को मजबूर कर दिया था। महिंदा की हैसियत अपने भाई, लगभग निवर्तमान हो चुके राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे से ज्यादा थी, क्योंकि उन्होंने ही राष्ट्रपति के नाते मई, 2009 में तमिल इलाकों को तहस-नहस करवाने के बाद लगभग ढाई दशक से चल रहे गृहयुद्ध को खत्म करवाया था। राजपक्षे परिवार ने तमिलों के पराभव को सिंहल बहुसंख्यकवाद के वर्चस्व की स्थापना के रूप में प्रस्तुत किया था। राजपक्षे परिवार की ताकत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि देश के शीर्ष चार पदों पर परिवार के लोग ही थे; इसके अलावा नौकरशाही, सेना और अन्य पदों पर भी इसी खानदान के लोग काबिज थे। सत्ता के अहंकार ने राजपक्षे परिवार को जनता के गुस्से का अहसास नहीं होने दिया। गोटबाया ने हिसाब लगाया कि दूसरे परिवार के रानिल विक्रमसिंघे को प्रधानमंत्री बनाकर संकट पर काबू पाया जा सकता है। इस तरह सर्जरी के केस को पेनकिलर से ठीक करने की कोशिश होती रही। लेकिन रोजमर्रा का संकट बढ़ता रहा। पेट्रोल-डीजल, खाने-पीने की चीजों और दवाओं की कमी ने आम आदमी की दुश्वारियों को असहनीय बना दिया। आज यह संकट पूरी दुनिया में श्रीलंका की जगहंसाई का कारण बन गया है।

### सूडोकु नवताल- 6134

मध्यम

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | | | | | | 9 | 6 | |
| | | | | | | | 1 | 4 |
| | | | 2 | 8 | | | | |
| | | | 8 | | | | 5 | 2 |
| 6 | | | | | | | | 7 |
| 1 | 4 | | | | 3 | | | |
| | | | | 4 | 1 | | | |
| | 2 | 5 | | | | | | |
| | | 3 | 7 | | | | | 4 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.

■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.

■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.

■ पहेली का केवल एक ही हल है.

**सूडोकु नवताल -6133 का हल**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 6 | 5 | 1 | 8 | 2 | 7 | 4 | 9 |
| 7 | 9 | 2 | 3 | 5 | 4 | 1 | 8 | 6 |
| 4 | 1 | 8 | 6 | 7 | 9 | 5 | 3 | 2 |
| 6 | 5 | 9 | 2 | 4 | 8 | 3 | 7 | 1 |
| 8 | 4 | 7 | 9 | 3 | 1 | 6 | 2 | 5 |
| 1 | 2 | 3 | 5 | 6 | 7 | 4 | 9 | 8 |
| 2 | 7 | 6 | 4 | 9 | 5 | 8 | 1 | 3 |
| 5 | 8 | 1 | 7 | 2 | 3 | 9 | 6 | 4 |
| 9 | 3 | 4 | 8 | 1 | 6 | 2 | 5 | 7 |

## जिंदगी की खुशियाँ

प्रभुनाथ शुक्ल

आसमान बादलों से घिर आया था और हवाओं में काफी नमी थी। वे दोनों नंग-धड़ंग चाट की दुकान के नीचे सीढ़ियों पर बैठ, हर ग्राहक को चाट खाते बड़ी आशा के साथ देख रहे थे। कुछ देर बाद मालिक ने नौकर से कहा ÷पकौड़े के थोड़े चुरे उन्हें दे दो और जल्द भगाओ। जाहिल पता नहीं कहाँ से धंधे के टाइम टपक पड़ते हैं÷। दोनों की उम्र यही तीन से पांच साल के बीच थी। दोनों आपस में सगे भाई थे। सुबह से उन्हें कुछ खाने को आज नहीं मिला था जिसकी वजह से उन्हें जोर की भूख लगी थी और वे पकौड़े के चुरे को लेकर आपस में लड़झगड़ रहे थे। छोटा वाला बड़े से पकौड़े का सारा चुरा छिनना चाहता था, लेकिन बड़ा छोटे को थोड़ा देना चाहता था क्योंकि चुरे की मात्रा बेहद कम थी। जबकि छोटा पूरा चुरा स्वयं लेने की जिद कर रहा था और आँखें मलमल कर खूब रोए जा रहा था।

दुकान पर आए लोग चाट खाने के बाद जूठी प्लेटों को उन्हीं की तरफ डाल रहे थे, लेकिन उसमें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मैं उनकी गतिविधियों को आधे घंटे से बड़ी बारीकी से देख रहा। थोड़ी देर बाद हम उनके पास गए और बोले ÷छोटू क्यों रो रहा है÷। बड़े भाई ने कहा ÷यह पकौड़े का सारा चुरा अकेले खाना चाहता है। लेकिन मुझे भी जोर की भूख लगी है फिर हम इसे पूरा का पूरा कैसे दे दूँ। कहता है मुझे सारा चुरा दे दो÷। लोग चाट खाते और निकल जाते लेकिन उनकी तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता।

उनकी बातें समझने के बाद हमने पूछा ÷छोटू पकौड़े खाओगे÷? मेरी तरफ से पकौड़े का प्रस्ताव मिलने के बाद उसने हमारी तरफ उम्मीद भरी नजरें टिका दी । अब उसने बड़े भाई से लड़ना बंद कर दिया था और उसकी सारी उम्मीद मुझ पर टिक गयी थी। मेरे इस प्रस्ताव के बाद लगातार मेरी तरफ देख रहा था। मैंने कहा ÷चलो हम तुम्हें पकौड़े दिलाते हैं÷। मेरा इतना कहना भर था कि वह चाटवाली दुकान की तरफ बढ़ गया। चाट की दुकान से हमने उसे चार पकौड़े दिलाए तो वह खुशी के मारे झूम उठा और कई बार हमें ऊपर से नीचे तक देखता रहा और फिर मुस्कुराता हुआ आगे बढ़ गाया। मुझे लग रहा था जैसे उसे पकौड़ा ही नहीं जिंदगी की सारी खुशियां मिल गयी हों।

# जनशिक्षण संस्थान ने किया स्वच्छता पखवाडे का शुभारम्भ

**मुरैना।** कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रायोजित जन शिक्षण संस्थान भिण्ड, में शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के कर्मचारियों व प्रशिक्षकों द्वारा स्वच्छता की शपथ ग्रहण की गयी व स्वच्छता पखवाडे के तहत आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की रूप रेखा सभी को बताई गयी। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक संजय राजौरिया ने कहा कि इस स्वच्छता अभियान से सीख लेकर हमें स्वच्छता को हमेशा के लिए अपनाना है एवं इस पखवाडे के बाद भी हमें स्वच्छता का ख्याल रखना है। हमने शपथ ली है कि हम न तो गन्दगी करेंगे और न होने देंगे एवं स्वच्छता के लिए समय देंगे। हमें अपने कार्यस्थल, निवास स्थल, व सार्वजनिक स्थल सभी जगह स्वच्छता रखना है। श्री राजौरिया ने बताया कि जो भी देश स्वच्छ दिखते है उसका कारण यह कि कि वहाँ के नागरिक गंदगी नहीं करते हे और न ही होने देते है। मुझे मालूम है कि स्वच्छता की तरफ बढाया गया मेरा एक कदम पूरे भारत देश को स्वच्छ बनाने में मदद करेगा। हमारे आस-पास गंदगी होने से बीमारियों का खतरा बढता है। इनमें गंदगी से फैलने वाली बीमारियो में डेंगू, मलेरिया, टायफाइड आदि है। हमें अपने आस पास साफ सफाई रखनी चाहिये। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक संजय राजौरिया संस्थान के कार्यक्रम अधिकारी संतोष दुबे व मनोज कुमार सहायक कार्यक्रम अधिकारी दिनेश शर्मा, अंजली शर्मा, लेखपाल अमित शर्मा, लिपिक अजय सिहं कुशवाह, कम्प्यूटर ऑपरेटर जितेन्द्र शर्मा, जय प्रकाश, रामवीर, एवं प्रशिक्षक श्रीमती मिथलेश सोनी, अनीता श्रीवास्तव, साक्षी राखे, अख्तरी बेगम, दिनेश सिंह राजपूत, शैलेन्द्र सिंह राजपूत, गजेन्द्र सिहं राजपूत, कुलदीप सिहं, धर्मेन्द्र शर्मा आदि लोग उपस्थित रहें।

### विश्व युवा कौशल दिवस का आयोजन

जन शिक्षण संस्थान भिण्ड द्वारा विश्व युवा कौशल दिवस का आयोजन संस्थान के कार्यालय बीरेन्द्र बाटिका लहार रोड पर किया गया। इस अवसर पर जन शिक्षण संस्थान के निदेशक संजय राजौरिया ने लभार्थियो से आह्वान किया कि आप अपने कौशल को विकसित करें तथा रोजगार एवं स्वरोजगार हेतु अपने आप को तैयार करे। रोजगार के अवसर उपलब्ध करने हेतु रोजगार एवं स्वरोजगार सेवा योजना पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया तथा स्वरोजगार हेतु रोजगार मित्र पोर्टल पर अपना रजिस्ट्रेशन करने के बाद आप रोजगार में कंपनियों में रोजगार आसानी से प्राप्त कर सकते है। कार्यक्रम अधिकारी संतोष दुबे ने प्रधानमंत्री कौशल विकास योजनाओ से जुडकर अधिक से अधिक लोगो स्वरोजगार हेतु जुडने की आवश्यकता पर जोर दिया।

## प्यासे प्राणियों की जल सेवा सभी धर्मों की ज्ञान गंगा की मुख्यधारा है: गांधी

**मुरैना।** रेलवे स्टेशन पर संचालित स्काउट गाइड के शीतल पेय जल सेवा शिविर का औपचारिक समापन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद वरिष्ठ समाजसेवी गोपालदास गांधी ने कहा कि सभी प्यासे प्राणियों की जल सेवा सभी धर्मों की ज्ञान गंगा की मुख्यधारा है। आज औपचारिक समापन में मुरैना रेलवे स्टेशन पर जो स्काउट गाइड सेवा मैं जिन लोगों ने सहयोग प्रदान प्रदान किया है यात्रियों को शीतल जल उपलब्ध कराया उनके प्रति आभार व्यक्त किया करता हूं तथा उनके भविष्य की कामना करता हूं। शिविर संचालक श्री यादव ने समापन अवसर पर शिविर के बारे में बताया कि अबकी बार यह जल सेवा शिविर 25 अप्रैल से शुरू होकर आज तक चली है और यह रिकॉर्ड लगभग 50 बच्चों ने 6 घंटे प्रतिदिन सेवा कार्य किया है। इस तरह से लगभग 300 घंटे प्रतिदिन काम हुआ है। इस दौरान समय-समय पर तमाम शहर के समाजसेवी एवं दान दाता उपस्थित हुए। उन्होंने स्वयंसेवकों और स्काउट्स का उत्साहवर्धन करने के लिए उन्हें टीशर्ट साफी कैप वितरित किए गए हैं। प्रतिदिन स्काउट्स को नाश्ते के लिए समाजसेवी द्वारा व्यवस्था की जाती है। औपचारिक समापन के अवसर पर समाजसेवी गोपालदास गांधी, संभागीय प्रशिक्षण केंद्र जीगनी मुरैना के उपाध्यक्ष सुरेंद्र सिंह यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष ओ पी गुप्ता, अशोक यादव, करतार सिंह राजपूत, लोकेंद्र सिंह, संजय सिंह, वीरेंद्र सिंह धाकड़ मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

## टीएसएस इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित हुई बच्चों की कैरियर काउंसलिंग

**मुरैना।** शनिवार को स्थानीय टीएसएस इंटरनेशनल स्कूल मुरैना में कक्षा 10, 11 एवं 12 के छात्रों की कैरियर काउंसलिंग आयोजित की गई। यह कैरियर काउंसलिंग देश के विख्यात जेपी यूनिवर्सिटी गुना के विशेषज्ञों द्वारा की गई। इस काउंसलिंग कार्यक्रम में बच्चों को अपना भविष्य तथा चुने हुए विषय में अपना कैरियर बनाने के लिए मार्गदर्शन दिया गया। काउंसलिंग के दौरान किसी भी विषय में अपार संभावनाओं के लिए कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

# नगरीय निकाय चुनाव प्रथम चरण के मतदान की मतगणना आज

### -अंबाह, पोरसा में अब धनाढ्य को मिलेगी नगरपालिका की कुर्सी

**मुरैना।** नगरीय निकाय चुनाव प्रथम चरण के मतदान की मतगणना आज 17 जुलाई रविवार को होनी है। पूरे प्रदेश में अनेक निगम, नगर पालिका व नगर परिषद लिए चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला आज होगा और सभी कैंडिडेट जीत के लिए ईश्वर की शरण में पहुंच गए। इसके साथ ही अंबाह एवं पोरसा नगर पालिका परिषद के लिए विजई प्रत्याशियों की घोषणा के पश्चात अध्यक्ष की कुर्सी के लिए मारामारी आरंभ हो जाएगी और यह देखने लायक नजारा होगा। मतगणना के लिए जिला प्रशासन एवं पुलिस द्वारा सुरक्षा प्रबंध कड़े कर दिए गए है।

6 जुलाई को नगरीय निकाय चुनाव के लिए प्रथम चरण का मतदान प्रदेश के अनेक हिस्सों में हुआ था, जिसमें मुरैना जिले की अंबाह नगर पालिका परिषद एवं पोरसा नगर पालिका परिषद भी शामिल है। 6 जुलाई को हुए मतदान की गणना आज रविवार को सुबह से प्रारंभ हो जाएगी और लगभग दोपहर तक दोनों नगरपालिकाओ में कौन-कौन व किस दल का पार्षद जीतकर आया है, यह स्पष्ट हो जाएगा। परिणाम के बाद दोनों जगह अध्यक्ष पद की दावेदारी के लिए जोड़-तोड़ आरंभ होगी और खरीद-फरोख्त का सिलसिला भी चलेगा। गौरतलब है कि पूर्व में नगर पालिका परिषद अध्यक्ष के लिए जनता ही चुनाव करती थी, लेकिन सरकार द्वारा इस बार यह व्यवस्था समाप्त कर दी गई है और केवल महापौर के लिए ही जनता चुनाव कर रही है। इस कारण अब पार्षदों के जीतने के पश्चात ही अध्यक्ष के भाग्य का फैसला होगा और इसके लिए मुख्य कांग्रेस, भाजपा राजनीतिक दल दोनों ही साम, दाम, दंड, भेद की रणनीति अपनाएंगे। रविवार को होने वाली मतगणना के लिए प्रत्याशियों एवं उनके समर्थकों में भारी जोश एवं उत्साह देखने को मिल रहा है और सुबह का इंतजार कर रहे हैं। इसके चलते दोनों क्षेत्रों में राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई है तथा हर कोई अपनी अपनी जीत का आंकड़ा लगा रहा है। परिणाम के बाद किस को क्या मिलता है, यह रविवार की शाम तक स्पष्ट हो जाएगा।

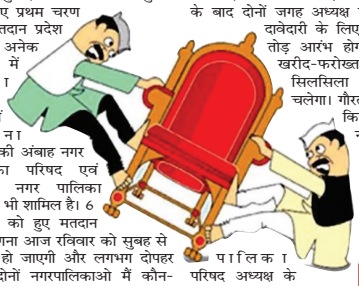

## हम फाउंडेशन मध्य भारत प्रान्त, मध्यप्रदेश के मुरैना में 2 शाखाएं गठित

**मुरैना।** संगठन विस्तार करने के लिए हम फाउण्डेशन के पदाधिकारियों की बैठक ग्वालियर रोड स्थित रॉयल मोटर्स महिन्द्रा शोरूम पर आयोजित की गई। इस दौरान दो शाखाओं का गठन किया गया। बैठक में हम फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष निशिकान्त चौधरी, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष प्रोफेसर इकबाल अली, प्रदेश महामंत्री ( प्रशासन ) दिनेश शुक्ला, प्रान्तीय अध्यक्ष प्रमोद समाधिया, प्रान्तीय संयोजक महिला सहभागिता एवं मुरैना जिला प्रभारी डॉ मिथिलेश बघेल की उपस्थिति में हम फाउंडेशन मुरैना सिटी एवं हम फाउंडेशन संस्कृति का विधिवत गठन हुआ। हम फाउंडेशन की नवगठित टीम में सिटी अध्यक्ष के रूप में इंजी पुष्पेंद्र बघेल, सचिव रामसेवक एवं कोषाध्यक्ष डॉ पंकज तिवारी को मनोनीत किया गया। इसी क्रम में संस्कृति शाखा अध्यक्ष के रूप श्रीमती ललिता दीक्षित, सचिव श्रीमती जया चतुर्वेदी तथा कोषाध्यक्ष श्रीमती ज्योति कदम निर्वाचित हुए, जिनका प्रांतीय अध्यक्ष ने शपथग्रहण कराया गया।

# नगर पालिका चुनाव की ईवीएम मशीन के स्ट्रांग रूम का सीसी टीवी डिस्प्ले बंद

### कांग्रेस में जताई गड़बड़ी की आशंका

अंबाह। नगर पालिका चुनाव में ईवीएम रखने के लिए पीजी कॉलेज में बनाए गए स्ट्रांग रूम के सीसीटीवी कैमरे का डिस्प्ले बंद हो जाने से शुक्रवार की शाम हंगामा हो गया। कांग्रेस नेताओं ने मौके पर पहुंचकर विरोध जताया। इसके बाद एसडीएम अंबाह राजीव समाधिया ने तकनीकी खराबी दूर करने एक कर्मचारी को मौके पर पहुंचकर डिस्प्ले चालू कराया। प्रशासन का कहना है कि तकनीकी खराबी के कारण एलईडी का डिस्प्ले बंद हुआ था लेकिन कैमरों की रिकॉर्डिंग चालू थी।

ज्ञात रहे कि पीजी कॉलेज के हाल में बनाए गए स्ट्रांग रूम में नगर पालिका के सभी 18 वार्डों की ईवीएम रखी गई हैं। यहां पर सुरक्षा की दृष्टि से सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए हैं। इन कैमरों के डिस्प्ले के लिए स्ट्रांग रूम के बाहर एलईडी टीवी लगाई गई है, जिसके जरिए ईवीएम रखे हुए कमरे की गतिविधियों को देखा जा सकता है। कांग्रेस नेता जनपद अध्यक्ष राम सिंह तोमर ने बताया कि शुक्रवार शाम उन्हें जानकारी मिली कि कॉलेज में एलईडी पर कैमरा का डिस्प्ले नहीं हो रहा है। जनपद अध्यक्ष का कहना था कि डिस्प्ले बंद होने पर नगर पालिका क्षेत्र की ईवीएम दिखाई नहीं दे रही थी वही जहां ईवीएम को रखा गया है। वह कमरा भी दिखाई नहीं दे रहा था। मौके पर जो सुरक्षाकर्मी मौजूद था, उसने कहा कि कैमरो को लेकर उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है जिसके बाद इसकी सूचना एसडीएम राजीव समाधिया अंबाह को दी गई। सूचना के लगभग 1 घंटे बाद कैमरा सही करने के लिए एक कर्मचारी पहुंचा जिसने तकनीकी खराबी को दूर कर टीवी पर डिस्प्ले शुरू करा दिया, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष उमा शरण शर्मा दाऊ का कहना है कि एक एलईडी अभी भी बंद है। यह प्रशासनिक लापरवाही है जिसकी शिकायत चुनाव आयोग से की जाएगी। इस संबंध में जिला कांग्रेस कमेटी की कार्यकारी अध्यक्ष मधुराज सिंह तोमर का कहना है कि स्ट्रांग रूम को प्रदर्शित करने वाली एलईडी का बंद होना गंभीर मामला है और इससे गड़बड़ी की आशंका है। श्री तोमर ने कहा है कि पीजी कॉलेज में बनाए गए स्ट्रांग रूम में नगर पालिका चुनाव के बाद ईवीएम मशीन रखी गई है, उनका कैमरे का बंद होना गंभीर मामला है। उन्होंने कहा कि भाजपा नगर पालिका अंबाह के ज्यादातर वार्डों में चुनाव हार रही है, इसलिए वह किसी भी तरह की गड़बड़ी करवा सकती है, इस मामले में उचित कार्यवाही होनी चाहिए।

# पिता का इलाज कराने आये बेटे की जिला अस्पताल से बाइक हुई चोरी

**मुरैना।** जिला अस्पताल परिसर से पेशेंट के अटेंडर की मोटर साइकिल चोरी हो जाने से हड़कंप मच गया और अस्पताल प्रबंधन की सुरक्षा की पोल खुल गई। जिला अस्पताल में जगह-जगह सीसीटीवी कैमरे लगे होने के बावजूद चोर युवक की बाइक चोरी कर ले गए, जिसकी रिपोर्ट कोतवाली में दर्ज कराई गई है।

जानकारी के अनुसार मुरैना जिले की जौरा तहसील निवासी समीर पुत्र मुन्ना खान बीती रात अपने पिता की तबियत खराब होने पर जौरा से पल्सर गाड़ी पर बैठा कर मुरैना जिला चिकित्सालय लेकर आया, जहाँ समीर अस्पताल परिसर में अपनी बाइक खड़ी कर डॉक्टर के पास गया। इमरजेंसी ड्यूटी पर उपस्थित डॉक्टर ने चेकअप करने के बाद समीर के पिता को वार्ड में भर्ती कर दिया और रात भर समीर अपने पिता के पास रहा। जब शनिवार की सुबह समीर ने बाइक को देखा तो बाइक अपने स्थान पर नहीं थी। इधर-उधर देखने के बाद भी बाइक का कुछ नहीं पता चला तो अंदाजा लगाया कि कोई वाहन चोर बाइक चुरा ले गया, उसके बाद समीर सिटी कोतवाली थाने पहुंचा, जहाँ आवेदन लिखकर पुलिस से शिकायत की। पुलिस ने आवेदन लेकर जांच पड़ताल शुरू कर दी है।

# पूर्व पार्षद नरेंद्र देव कर रहे थे चुनाव को प्रभावित, चेतावनी देकर छोड़ा था: राठौड

**मुरैना।** झुण्डपुरा के पूर्व पार्षद नरेंद्र देव रविकर ने चिन्नौनी थाना प्रभारी पर अभद्रता का जो आरोप लगाया है, उसका खंडन करते हुए थाना प्रभारी अविनाश सिंह राठौड ने कहा है कि 13 जुलाई को मतदान चल रहा था और पूर्व पार्षद द्वारा बार बार फोन एवं व्हाट्सएप पर झूठी सूचना दी जा रही थी, जिस पर पुलिस द्वारा शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न कराने के उद्देश्य से नरेंद्र देव को चेतावनी देकर छोड़ दिया था। पूर्व पार्षद के द्वारा लगाए गए आरोप गलत है। गौरतलब है कि दिनांक 13 जुलाई को नगर परिषद झुण्डपुरा में संपन्न हो रहे मतदान के दौरान वार्ड क्रमांक 05 सिंगपुरा के मतदान केन्द्र के पास अपने रसूख का रौब दिखा कर मतदान को प्रभावित करने की नियत से बार-बार पुलिस को लडाई झगडे की झूठी सूचना देकर पुलिस व्यवस्था को अपने स्थान से हटाने वाले पूर्व पार्षद नरेन्द्र देव रविकर को पुलिस द्वारा चेतावनी देकर मतदान केन्द्र से खदेडा गया, यह बात थाना प्रभारी अविनाश सिंह राठौड द्वारा बताई गई है।

पूर्व पार्षद नरेन्द्र देव रविकर द्वारा थाना प्रभारी के मोबाईल पर करीबन 4-5 बार कॉल कर के अलग-अलग मतदान केन्द्रो पर लडाई झगडा होने की सूचना दी गई, जब पुलिस बल उक्त मतदान केन्द्रो पर पहुंचा तो वहां किसी भी प्रकार के झगडे की कोई स्थिति नही पाई गई तथा मतदान सुचारू रूप से चलता पाया गया। इसी क्रम में पूर्व पार्षद नरेन्द्र देव रविकर द्वारा सिंगपुरा पोलिंग बूथ पर झगडे की सूचना थाना प्रभारी को मोबाईल नम्बर पर दी, जिस पर थाना प्रभारी द्वारा बताया गया कि उक्त पोलिंग बूथ पर थाना प्रभारी सरायछौला निरी. शिवकुमार शर्मा पर्याप्त बल के साथ मौजूद है, जिस पर पूर्व पार्षद द्वारा पुलिस बल नही होने की बात की तथा चौकी प्रभारी झुण्डपुरा को भी सिंगपुरा के मतदान केन्द्र पर झगडे की सूचना दी। उक्त सूचना पर अलग अलग पोलिंग बूथ की सुरक्षा व्यवस्था में लगी सभी पुलिस मोबाईल पार्टियां सिंगपुरा मतदान केन्द्र पर पहुंच गई। उक्त मतदान केन्द्र पर थाना प्रभारी सरायछौला निरी. शिव कुमार शर्मा मौजूद थे तथा मतदान शांतिपूर्ण तरीके से जारी था, जिस पर थाना प्रभारी चिन्नौनी द्वारा पूर्व पार्षद नरेन्द्र देव रविकर को सिंगपुरा पोलिंग बूथ पर बुलाया गया जो कि पोलिंग बूथ के पीछे की तरफ किसी के घर में बैठे थे तथा झगडे की झूठी सूचना देने के कारण के संबंध में पूछा गया तो उनके द्वारा बताया गया। पहले झगडा हो रहा था जो बंद हो गया है, पूर्व पार्षद नरेन्द्र देव रविकर के द्वारा बताई बात की पुष्टि अन्य व्यक्ति द्वारा की गई तथा सभी के द्वारा शांतिपूर्वक मतदान होने की बता कही, जिस पर थाना प्रभारी चिन्नौनी अविनाश सिंह राठौड द्वारा पूर्व पार्षद को झूठी सूचना नहीं देने के संबंध में हिदायत दी तो पूर्व पार्षद नरेन्द्र देव रविकर वार काउंसिल का सीनियर एडवोकेट होने की बात कह थाना प्रभारी चिन्नौनी को आंखे दिखाने लगे तथा थाना प्रभारी को देख लेने की धमकी देने लगे। जिस पर थाना प्रभारी चिन्नौनी द्वारा पूर्व पार्षद नरेन्द्र देव रविकर की उम्र का लिहाज करते हुये पुनः झूठी सूचना नहीं देने के संबंध में हिदायत देकर मतदान स्थल से जाने को कहा गया।

# ग्वालियर पुलिस ने मुरार अनुभाग के विवेचकों के प्रशिक्षण लिये आयोजित की एक दिवसीय कार्यशाला

ग्वालियर।

ग्वालियर पुलिस द्वारा पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री अमित सांघी,भापुसेके निर्देश पर नगर पुलिस अधीक्षक मुरार श्री ऋषिकेश मीणा,भापुसेके द्वाराअपराधों की विवेचना के दौरान रहने वाली कमियों को सुधारने के उद्देश्यम से मुरार अनुभाग के विवेचकों के लिये एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में पुलिस अधीक्षक अजाक ग्वालियर रेंज श्री पंकज पाण्डेय के अलावानगर पुलिस अधीक्षक मुरारतथा सहायक जिला लोक अभियोजक अधिकारी श्रीगोपाल सिकरवार, मनीष शर्मा के साथ मुरार अनुभाग के 25 सह उपनिरीक्षक व प्रधान आरक्षकगण उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण कार्यशाला के प्रारंभ में नगर पुलिस अधीक्षक मुरार द्वारा प्रशिक्षण कार्यशाला में उपस्थित सभी विवेचकों को थानेमें संपादित किये जाने वाले संपूर्ण कार्यों के संबंधमें जानकारी दी साथ ही उनको बताया कि आप पुलिस प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है थानों की कार्यप्रणाली में विवेचकों का बहुत ही महत्वपपूर्ण योगदान है। प्रशिक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक अजाक ग्वालियर रेंज ने कार्यशाला में उपस्थित सभी विवेचकों से कहा कि ड्यूटी के दौरान आपको अपने गणवेश के साथ-साथ आचरण को भी अच्छा? रखने की आवश्य कता है इस प्रकार हम जनता के बीच पुलिस विभाग की छवि को अधिक अच्छाथ एवं उत्कृष्टन बना सकते है। उन्होइने कार्यशाला में उपस्थित सह उपनिरीक्षक एवं प्रधान आरक्षकोंको विवेचना संबंधी कार्य जैसे एफआईआर काटना, जप्तीश पंचनामा तैयार करना, मैमो आदि तैयार करने की जानकारी दी साथ हीउनको विवेचना की बारिकियों से भी अवगत कराया। उन्होमने कहा कि अपराध विवेचना करते समय आपको केस डायरी लेखन, गिरफ्तारी व जप्तीप पंचनामा आदि बनाते समय विशेष ध्या न रखना चाहिये। उन्होदने जप्तीक माल के निराकरण, विवेचना में डिजीटल साक्ष्योंद की उपयोगिता व अपराध निकाल में तकनीकी के उपयोग पर प्रकाश डाला,साथ कहा कि आप सभी प्रकरण की विवेचना को समय सीमा में पूर्ण कर आप पीड़ित को न्याआय तथा आरोपी को सजा दिला सकते है। कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षणार्थीयों को सहायक जिला लोक अभियोजको द्वारा विवेचना के दौरान आने वाली कानूनी समस्याओंको की जानकारी दी साथ ही उनको निराकरण के उपायों से भी अवगत कराया, साथ ही माननीय न्या यालय की रुलिंग के हिसाब से किस तरह से विवेचना में एक-एक बिंदु पर गंभीरता से काम करना है इस संबंध में भी उपस्थित विवेचकों को जानकारी दी।

## सेवानिवृत सेवड़ा एसडीओपी सहपत्नी पहुंचे सेवड़ा

**पुष्पांजली टुडे**

**दतिया /**सेवानिवृत सेवड़ा एसडीओपी उपेंद्र दीक्षित सहपत्नी पहुंचे सेवड़ा जहां समाज सेवा टीम एवं सेवड़ा नगर वासियों ने जमकर स्वागत किया बताना चाहेंगे सेवड़ा एसडीओपी उपेंद्र दीक्षित

किला गेट पर बनी श्री राम जानकी मूर्तिकला गिफ्ट दुकान पर भव्य स्वागत* किया गया जिसमें हार, फूल माला पहनाकर, आरती उतारी गई इतना ही नहीं सेवड़ा एसडीओपी जिंदाबाद के *नारे भी लगाए गए इस दौरान, श्यामू ठाकुर ,राहुल चौरसिया मातादीन जाटव संतोष गोड जॉनी मूर्तिकार नेतराम गोड राम सिया कुशवाह आसाराम नामदेव धीरज रजक बबलू चौरसिया राम सिया जाटव ,आदि सेवड़ा के गणमान्य लोगों के द्वारा सेवड़ा एसडीओपी* का स्वागत किया गया द्य

## युवा पंचायत कार्यक्रम के लिए छत्रसाल महाविद्यालय में हुई स्क्रीनिंग

**पुष्पांजली टुडे**

नगर के शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय पिछोर जिला शिवपुरी में आज दिनांक 16 जुलाई 2022 को चंद्रशेखर आजाद की 116 वीं जयंती के उपलक्ष्य में युवा पंचायत कार्यक्रम की स्क्रीनिंग के लिए छत्रसाल महाविद्यालय को स्क्रीनिंग सेंटर बनाया गया महाविद्यालय ने एक स्क्रीनिंग समिति का गठन किया और सभी छात्र छात्राओं को जिन्होंने ऑनलाइन पंजीयन किया था उनकी आयु संबंधी एवं दक्षता व विषय प्रतिपादन क्षमता को परखा। इसके लिए 2 मिनट का समय छात्र छात्राओं के लिए दिया गया। इस अवसर पर 50 से अधिक छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ एसएस गौतम की उपस्थिति में तथा कार्यक्रम प्रभारी एवम् एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ कमल किशोर यादव की संयोजन में स्क्रीनिंग कमेटी के सदस्यों ने स्क्रीनिंग की जिसमें डॉक्टर अक्षय कुमार जैन डॉक्टर करण सिंह जाटव डॉक्टर भावना भटनागर श्री अतर सिंह श्री अनुराग पटेरिया एवं श्री रजनीश तिवारी के साथ-साथ दल नायक दीपक पाल की उपस्थिति रही।

## ग्वालियर में पासपोर्ट सेवा लघु केन्द्र (PSLK) खोला जाए : MPCCI

**विदेश मंत्री-माननीय डॉ. एस. जयशंकर, केन्द्रीय नागर विमानन मंत्री-माननीय श्रीमंत ज्योतिरादित्य जी सिंधिया, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री-माननीय श्री नरेन्द्र सिंह तोमर एवं सांसद-माननीय श्री विवेकनारायण शेजवलकर को चेम्बर ऑफ कॉमर्स ने लिखे पत्र**

**ग्वालियर।** नवीन पासपोर्ट चाहने वाले आवेदनकर्ताओं की परेशानियों को ध्यान में रखते हुए ग्वालियर में भी इन्दौर की भांति आधुनिक पासपोर्ट सेवा लघु केंद्र (PSLK) तत्काल प्रारम्भ किए जाने हेतु आज चेम्बर ऑफ कॉमर्स द्वारा विदेश मंत्री-माननीय डॉ. एस. जयशंकर, केन्द्रीय नागर विमानन मंत्री-माननीय श्रीमंत ज्योतिरादित्य जी सिंधिया, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री-माननीय श्री नरेन्द्र सिंह तोमर एवं सांसद-माननीय श्री विवेकनारायण शेजवलकर को पत्र प्रेषित किए गए । MPCCI, अध्यक्ष-विजय गोयल, संयुक्त अध्यक्ष-प्रशांत गंगवाल, उपाध्यक्ष-पारस जैन, मानसेवी सचिव-डॉ. प्रवीण अग्रवाल, मानसेवी संयुक्त सचिव-बृजेश गोयल एवं कोषाध्यक्ष-वसंत अग्रवाल ने प्रेस को जारी विज्ञप्ति में अवगत कराया है कि नवीन पासपोर्ट हेतु ग्वालियर में डाकघर पासपोर्ट सेवा केन्द्र (POPSK) संचालित किया जा रहा है । उक्त केन्द्र पर ग्वालियर अंचल के सात जिलों का भार होने से अंचल में पासपोर्ट चाहने वालों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्वालियर के पासपोर्ट कार्यालय में प्रतिदिन लगभग 50-55 ही पासपोर्ट बन रहे हैं, जबकि इन्दौर में पर्याप्त स्टॉफ व भव्य कार्यालय होने से 350 सामान्य एवं 45 तत्काल का स्लॉट है । वहीं ग्वालियर में सामान्य रूप से पासपोर्ट बनवाने के लिए 80 का स्लाट है और तत्काल आवेदन के लिए कोई भी स्लाट उपलब्ध नहीं है । साथ ही, स्टॉफ की भी काफी कमी है । पदाधिकारियों ने कहा है कि ग्वालियर में भी इन्दौर की भांति आधुनिक पासपोर्ट केन्द्र (PSLK) बनाए जाने की आवश्यकता है क्योंकि ग्वालियर में आवेदनकर्ताओं को पासपोर्ट सेवा केन्द्र में बैठने हेतु भी पर्याप्त स्थान उपलब्ध नहीं है। साथ ही, आवेदनकर्ताओं के लिए न ही पीने के पानी की उचित व्यवस्था है और न ही वाहनों की पार्किंग के लिए स्थान। कुल 200 वर्गफीट के कमरे में दो कर्मचारी एवं एक अधिकारी तैनात है, जबकि इन्दौर में 11 हजार वर्गफीट में पासपोर्ट सेवा लघु केन्द्र बनाया गया है । इन्दौर में क्षेत्रीय अधिकारी सहित करीब 15 कर्मचारियों का पर्याप्त स्टॉफ है ।

## जिला युवा महापंचायत हेतु स्क्रीनिंग कर युवाओं का किया गया चयन

**दैनिक पुष्पांजली टुडे**

**भिण्ड ।** मध्यप्रदेश की माटी में जन्मे वीर सपूत अमर शहीद स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद की 116 वीं जयंती के अवसर पर 23और 24 जुलाई को भोपाल में आयोजित होने वाली यूथ महापंचायत के लिए आज भिंड जिले के 5 स्क्रीनिंग केंद्रों पर ऑनलाइन पंजीकृत युवा प्रतिभागियों का चयन किया गया। शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक1,भिंड केंद्र पर राष्ट्रीय सेवा योजना के संयोजन में प्राचार्य पी एस चौहान और जिला नोडल अधिकारी प्रोफेसर हरीशंकर कंसाना के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में युवाओं का चयन किया गया। निर्णायक मंडल सदस्य प्रोफेसर इकबाल अली पर्यावरणविद, वरिष्ठ पत्रकार रामानंद

सोनी, समाजसेवी शिक्षा शास्त्री आर एन तिवारी,प्रोफेसर रामानंद शर्मा और पूर्व एसडीसी अधिकारी व्याख्याता जे एन पाठक द्वारा जिला युवा महापंचायत हेतु उपस्थित युवाओं का चयन किया गया,जो 18 जुलाई को राज्य महापंचायत हेतु अग्रणी महाविद्यालय एम जे एस भिण्ड में सहभागिता करेंगे। यहां से 6 से 8 उत्कृष्ट युवाओं का चयन भोपाल में होने वाली युवा महा पंचायात के लिए किए जायेगा। इस दौरान खेल एवम युवा कल्याण विभाग के खेल प्रशिक्षक एवम आनंदम प्रभारी संजय सिंह एवं साधना तोमर भी मंचासीन रहें संचालन एवम आभार रासेयो कार्यक्रम अधिकारी धीरज सिंह गुर्जर ने किया। चयनित युवाओं में संजयदत्त शर्मा,आशुतोष शर्मा नंदू,, निशांत जादौन, मीनाक्षी, हरेकृष्ण शर्मा आजाद,आरती यादव, नीरज,हर्षित यादव,संतोष कुमार, पुष्पा, शिवम,स्वप्निल शर्मा, हर्ष ,अभिषेक शाक्य आदि के नाम सम्मिलित हैं।

## आदिवासी बनवासी संगठन ने पन्ना जिले की तहसीलों में वन अधिकार को लेकर के मुख्यमंत्री के नाम दिया ज्ञापन

### 1 अगस्त से 9 अगस्त तक होगा खुटा गाड़ो जमीन जोतो आंदोलन

**गौरीशंकर कुशवाहा ब्यूरो पुष्पांजली टुडे**

**पन्ना;** आदिवासी बनवासी क्रांति सेना (बुंदेलखंड) के संयोजक के पी सिंह बुंदेला के आवाहन पर आदिवासी बनवासी क्रांति सेना के पदाधिकारी कार्यकर्ताओं ने सैकड़ों वनवासियों सहित तहसील पवई, शाहनगर, रेपुरा, गुनौर, सलेहा थाना की तहसीलों में सौंपा ज्ञापन।

ज्ञापन में वन अधिकार कानून के तहत मांग की गई कि 6 दिसंबर 2005 के पूर्व से सैकड़ों बनवासी बन भूमि में काबिज हैं पर शासन प्रशासन द्वारा वन भूमि अधिकार पत्रक (पट्टे) अभी तक वितरण नहीं किए

गए है जो पूर्व में दावा आवेदन डाले गए थे वह बनवासी वन भूमि पत्रक पाने हेतु दर-दर भटक रहे हैं छोटो छोटी कमियों को लेकर के दावा आवेदन खारिज करना अन्याय पूर्ण होगा।

साथ ही मांग की गई है जिन वनवासियों को दावा आवेदन के तहत वन भूमि पट्टे मिल गए हैं उन्हें समान किसानों की तरह शासन की सुविधाओं से वंचित किया गया है।

बनवासियों ने 1 अगस्त से 9 अगस्त विश्व आदिवासी दिवस तक ÷खूंटा गाड़ो जमीन जोतो आंदोलन करगे÷ कब्जे की भूमि पर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा लगाकर कब्जे वाली वन भूमि को हल चला कर जोतेगे। शासन-प्रशासन की कुंभकरणी नींद से नहीं जागी तो बुंदेलखंड स्तर पर एक बड़ा आंदोलन होगा।

ज्ञापन सौंपने वालों में प्रमुख रूप से संगठन के अध्यक्ष सुरेंद्र सिंह, डॉक्टर सरफराज फरुकी, अजय सिंह, सुमित पांडे, धीरज सिह, सुदेश बाल्मीकि, साहब सिंह मरावी, नेत्रपाल बकरे, नितेश तिवारी, आदि सैकड़ों की तादाद पर वनवासियों ने संबंधित तहसीलों में ज्ञापन सौंपा सैकड़ों हजारों की तादाद पर आदिवासी बनवासी ज्ञापन में उपस्थित रहे।

# हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाने के लिए कलेक्टर ने दिए निर्देश

### समय सीमा पत्रों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक संपन्न

**दैनिक पुष्पांजली टुडे**

**भिण्ड ।** कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस की अध्यक्षता में साप्ताहिक समय-सीमा पत्रों की समीक्षा बैठक कलेक्टर कार्यालय भिण्ड के सभागार में आयोजित की गयी। बैठक में अपर कलेक्टर प्रवीण फुलपगारे, सीईओ जिला पंचायत जेके जैन, एसडीएम भिण्ड-अटेर उदय सिंह सिकरवार सहित अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

भारत सरकार द्वारा 'हर घर तिरंगा' अभियान 11 अगस्त से 17 अगस्त 2022 तक चलाया जाएगा। देश वासियों को अपने घर पर राष्ट्रीय ध्वज लगाने के लिए प्रेरित करने और जन सामान्य में देशभक्ति की भावना जागृत करने के उद्देश्य से भारत सरकार की ओर से 11 अगस्त से 17 अगस्त 2022 तक 'हर घर तिरंगा' अभियान के क्रियान्वयन के निर्देश दिए गए हैं। इस अभियान के क्रियान्वयन के संबंध में कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर ने अभियान के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन के लिए सभी जिलाधिकारियों को निर्देश दिए।

उन्होंने 'हर घर तिरंगा' अभियान का और आपूर्ति पूरे जिले में करने के लिए जिला पंचायत सीईओ और संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। इस अभियान के क्रियान्वयन के लिए नगरीय क्षेत्रों में पीओ डूडा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत और ग्रामीण विकास को विस्तृत निर्देश दिए हैं। ग्राम स्तर तक जागरुकता अभियान तथा जन भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एनएसएस, एनजीओ, जन अभियान परिषद आदि का सहयोग लेने के लिए कहा। बैठक में कलेक्टर ने इसके साथ ही ग्राम स्तर पर तिरंगा वितरण और विक्रय के लिए स्थानों का चयन करने के निर्देश दिये हैं।

कलेक्टर ने अंकुर अभियान अंतर्गत पौधा रोपण कार्यक्रम हेतु जिला संयोजक आदिम जाति कल्याण विभाग संजय गुप्ता एवं सहायक संचालक पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग श्रीमती कृति दीक्षित को सभी कॉलेजों से कॉर्डिनेट करने के निर्देश दिए। उन्होंने जन अभियान परिषद जिला समन्वयक शिव प्रताप सिंह से कहा है कि पौधा रोपण के साथ साथ पंजीयन का टारगेट भी डिस्ट्रीब्यूट कर दिया जाए। उन्होंने समस्त अधिकारियों को अपने-अपने कार्यालय परिसर में पौधा रोपण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी कार्यालयों में बारिश के दौरान वृक्षारोपण का सघन अभियान चलाया जाए कम से कम एक पौधा लगाकर तथा फोटो लेकर उसे वायुदूत ऐप पर अपलोड करें। कलेक्टर ने बैठक में जिला स्तर पर आपदा प्रबंधन के संबंध में संबंधित अधिकारियों से चर्चा कर जानकारी ली एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने सिंचाई विभाग के कार्यपालन यंत्री नरेश पाल को बांध एवं नदियों के जल स्तर की जानकारी प्रतिदिन ग्रुप में शेयर कर अवगत कराने के निर्देश दिए। उन्होंने अमृत सरोवर, युवा महापंचायत एवं पीएम किसान योजना के बैंक खातों के केवाईसी एवं आधार लिंकेज के संबंध में जानकारी ली एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

# मोती बाबा इंग्लिश मिडियम स्कूल का प्रथम तल कमरों का लोकार्पण

पुष्पांजली टुडे /नारायणलाल सेंणचा

**पाली** –श्री आईजी शिक्षण संस्थान रानी द्वारा संचालित मोती बाबा इंग्लिश मीडियम स्कूल रानी में दिनांक 14/07 / 2022 को विद्यालय भवन के प्रथम तल के कमरों का लोकार्पण समारोह एवं भामाशाह सम्मान समारोह कार्यक्रम में माँ आईजी की मेहरबानी एवं कृपा रही, एकबार तो इंद्रदेवता के तेवर से लगा की प्रोग्राम में तकलीफ पड़ेगी पर आई माताजी का आशीर्वाद और मोतिबाबा के पर्ण प्रताप से इंद्र देवता ने भी अपने तेवर कम किए और शानदार ऐतिहासिक कार्यक्रम हुआ ।कक्षा कक्षों के निर्माण में हमारे समाज के दानदाताओं और भामाशाहों ने पूरे जोश के साथ अपने परिवार के सभी सदस्यों की उपस्थिति में और विशेष रूप से अपने माता पिता के कर कमलों द्वारा फिता कटवाकर उदघाटन व लोकार्पण किया गया7 एवं लोकार्पण के पछात संस्थान के भामाशाहो का सम्मान किया गया ।इस कार्यक्रम के मुख्य अथिति अमित कुमार भोलाराम बिजोवा एवं मुख्य वक्ता बगदाराम चौधरी (वाईस चांसलर) एवं संस्थान के पदाधिकारियों की उपस्थिति में संस्थान के प्रोस्पेक्टस का विमोचन किया इस अवसर पर संस्थान के अध्यक्ष वनाराम के द्वारा सभी का स्वागत किया गया। संस्थान के सचिव घीसुलाल चौधरी के द्वारा संस्थान का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया जिसमे संस्थान की प्रारम्भिक स्थिति से वर्तमान तक की सम्पूर्ण जानकारी दी गयी ।कार्यर्क्रम के अंत में संस्थान के वरिष्ठ उपाध्यक्ष बाबूलाल चौधरी के द्वारा सभी का आभार ज्ञापित किया गया । ओर सभी से भोजन प्रसाद लेकर जाने का आग्रह विनम्रता से किया गया इस अवसर पर शिक्षा समिति के सदस्य उमेदकुमार सिरवी गिराली ,लक्माराम बडौद,प्रभु चांचोडी,सुजाराम रानिगाव,तथा संस्थान की सम्पूर्ण कार्यकारिणी के सदस्य एवम प्रवासी अपने अपने एरिया के उपाध्यक्ष तुलसाराम चौधरी गुड़ा एंदला, प्रमोद एन चौधरी सरथुर, वागाराम चौधरी गुड़ा मेहराम पेमाराम चौधरी मोकमपुरा मोडाराम चौधरी जवाली, कालुराम चौधरी दुदवर, अमरा राम चौधरी बिजोवा राणा राम चौधरी पड़ासला खुर्द, चेलाराम चौधरी फतापूरा, शेषाराम चौधरी बीजोवा, इंदुजी चौधरी पूर्व चेयरमैन बाली , रामलाल चौधरी उन्दर्थल ,जसाराम चौधरी बाबा गांव, कन्हैयालाल चौधरी ,मूलाराम चौधरी बाली, दिलीप चौधरी भीमालिया,देवाराम चौधरी, जगाराम चौधरी नाडोल एवं कार्यक्रम का सफल संचालन शिक्षा समिति सदस्य सुजाराम चौधरी ,व लकमाराम चौधरी द्वारा किया गया ।और विशेष रूप से सभी वडेरो के बुजुर्गो का बहुत बहुत सहयोग रहा सभी ने बड़ चढ़ कर इस कार्यक्रम में भाग लिया। और इस कार्यक्रम को ऐतिहासिक बनाने में अध्यक्ष महोदय वनाराम का, सचिव घुसीलाल पूर्व चेयरमैन रानी,हमारे कर्मठ और जुजारू कोषाध्यक्ष राणाराम चौधरी और वरिष्ठ उपाध्यक्ष बाबूलाल लचेटा और संपूर्ण कार्यकारिणी का विशेष सहयोग रहा ।




# लोकायुक्त ने हाउसिंग बोर्ड के बाबू को 10 हजार की रिश्वत लेते पकड़ा

**उज्जैन।** लोकायुक्त पुलिस ने भरतपुर स्थित हाउसिंग बोर्ड के कार्यालय में सहायक ग्रेड 3 कर्मचारी को मकान के नामांतरण के नाम पर 10 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। आरोपित ने देवास के जिला कोर्ट कर्मचारी से उसके मकान के नामांतरण के नाम पर घूस की मांग की थी।

लोकायुक्त निरीक्षक बसंत कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि राहुल दांगी निवासी हरिओम नगर देवास जिला न्यायालय देवास में भृत्य के पद पर पदस्थ है। राहुल ने वर्ष 2019 में देवास के जवाहर नगर में एक ईडब्ल्यूएस मकान 12.70 लाख रुपये में खरीदा था। नामांतरण के लिए उज्जैन के हाउसिंग बोर्ड कार्यालय में 10 मार्च को आवेदन दिया था। कार्यालय के संपत्ति प्रबंधन शाखा में पदस्थ सहायक ग्रेड 3 बालमुकुंद मालवीय उसका नामांतरण नहीं करते हुए उसे बार-बार टाल रहा था। कुछ दिन पूर्व मालवीय ने उससे 20 हजार रुपये की मांग की थी। दोनों के बीच सौदा 10 हजार रुपये में तय हुआ था। 5 जुलाई को राहुल ने इसकी शिकायत लोकायुक्त को की थी। इसके बाद लोकायुक्त ने दोनों की बातचीत को रिकार्ड करवाया था। शुक्रवार को बाबू मालवीय ने राहुल को रुपये लेकर भरतपुर स्थित कार्यालय बुलाया था। जैसे ही राहुल ने मालवीय को रुपये दिए और इशारा किया लोकायुक्त की टीम ने मालवीय को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया।

# सात साल रहे नंगे पैर, अब चप्पल पहनेंगे विक्रम भालेश्वर

**भोपाल।** त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में भोपाल जिला पंचायत के सदस्यों के परिणाम गुरुवार को घोषित हो गए थे। इसके बाद ओल्ड कैंपियन स्कूल में शुक्रवार को जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर अविनाश लवानिया ने सभी 10 सदस्यों को प्रमाण पत्र वितरित किए हैं। यहां प्रमाण पत्र लेने आए 10 सदस्यों में से वार्ड नंबर आठ के सदस्य विक्रम भालेश्वर ने साढ़े चार हजार मतों से जीत हासिल की है। उनका जीतना इसलिए खास है क्योंकि वह पिछले चुनाव 2015 में 62 मतों से हार गए थे। इसी दौरान उन्होंने प्रण लिया था कि वह चप्पल-जूते नहीं पहनेंगे। वह सात साल से नंगे पैर ही घूम रहे हैं। उन्होंने प्रचार भी नंगे पैर किया और अब जब वह जीत गए हैं तो जनता का आशीर्वाद लेने के बाद चप्पल-जूते पहनने का निर्णय लिया है।

### 132 ग्राम पंचायतों में किया नंगे पैर प्रचार

वार्ड क्रमांक आठ के सदस्य विक्रम भालेश्वर ने बताया कि उन्होंने हार के बाद प्रतिज्ञा ली थी कि वह जीत हासिल करने के बाद ही जूते-चप्पल पहनेंगे। इसके बाद से वह नंगे पैर ही रहे और अब वार्ड क्रमांक आठ की 30 पंचायतों के 132 गांवों में भी नंगे पैर चुनाव प्रचार किया है। उन्होंने जनता से वार्ड की सभी पंचायतों में विकास का वादा किया था, इसी से उन्हें जनता से समर्थन दिया है।

# अब घरेलू कामकाजी महिलाएं मांगेगी मेडिक्लेम और प्रेग्नेंसी लीव

**भोपाल।** अगर आपके घर रोजमर्रा के कामों के लिए सहयोगी के रूप में घरेलू कामकाजी महिलाएं आती हैं तो यह रिपोर्ट देखना आपके लिए बेहद जरूरी है। भोपाल में होम मेड्स ने अब अपनी यूनियन बना ली है, इसके जरिये इन महिलाओं ने अपने लिए वीकली ऑफ, मेडिक्लेम, प्रेगनेंसी लीव जैसी सुविधाओं के साथ अपने काम का दाम तय करने की भी मांग की है। इन महिलाओं ने काम के साथ-साथ नाम पर भी विचार किया है. वे चाहती हैं कि सार्वजनिक रूप से इन्हें ताई के नाम से जाना जाए।

घरेलू कामकाज करने वाली महिलाओं को लेकर कई मीम्स इन दिनों सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं. लेकिन, अब इन महिलाओं ने अपने हक की लड़ाई लड़ने का फैसला कर लिया है. सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर महिलाओं ने घरेलू कामकाजी ट्रेड यूनियन संगठन बनाया है। इनकी मांग है कि झाड़ू पोछा ,बर्तन, कपड़े धोने और खाना बनाने के न्यूनतम दाम तय हों, सप्ताह में 1 दिन का वीकली ऑफ और मेडिकल सिक्योरिटी भी मिले। इनके अलावा महिलाओं ने प्रेगनेंसी लीव की भी मांग की है।



### जारी रहेगी लड़ाई

इनके काम के सही दाम के साथ इन्हें नाम भी मिले इसलिए यह चाहती हैं कि इन्हें सार्वजनि रूप से 'ताई' के नाम से जाना जाए. सामाजिक कार्यकर्ता नीलम दास ने बताया कि सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर कामकाजी महिलाओं का यूनियन अब जनप्रतिनिधियों, अफसरों के सामने इन सभी मांगों को रख रहा है. हालांकि अभी काम का दाम और अन्य सुविधाओं को लेकर कोई ठोस फैसला नहीं हुआ है, लेकिन महिलाओं का कहना है कि यह संघर्ष जारी रहेगा. वहीं सामाजिक कार्यकर्ताओं और हाउसवाइफ भी इन होममेड्स की मांगो से इत्तेफाक रखती हैं।

### इस काम के इतने दाम

महिलाओं की इस युनियन का कहना है कि प्रति व्यक्ति के हिसाब से खाना बनाने के लिए 1 हजार रुपये का दाम तय हो. मकान के साइज के हिसाब से झाड़ू और पोछे की कीमत तय की जाए. इसके साथ ही बच्चों की देखभाल और कपड़े धोने के भी दाम सुनिश्चित किए जाएं. बता दें, प्रदेश में ऐसा पहली बार हो रहा जब घरेलू कामकाजी महिलाओं ने अपने काम के दाम तय करने को लेकर सरकार से मांग की है। यह महिलाएं भी अन्य मजदूरों की तरह ही हैं, जो परिस्थितिवश घरों में काम कर अपना और परिवार का जीवन यापन कर रही हैं।

# कोचिंग से देर से लौटने पर पिता ने बेटी को लोटे से बुरी तरह पीटा, शरीर पर 24 घाव

**भोपाल।** अशोका गार्डन इलाके में एक बेरहम पिता ने अपनी 14 साल की बेटी के साथ जमकर मारपीट की। आरोपित दो दिन से बेटी पर कोचिंग से देर से आने पर नाराज था। उसने इस बात पर गुस्सा कर बेटी से गाली-गलौज की थी और एक बार फिर उसी बात को लेकर बेटी को तांबे के लोटे से इतना पीटा कि उसके होंठ, भोंहे, गाल समेत पूरे शरीर पर करीब दो दर्जन घाव हो गए। बेटी की शिकायत पर पुलिस ने मारपीट और जेजे एक्ट में एफआइआर दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है।

अशोका गार्डन थाना प्रभारी आलोक श्रीवास्तव के मुताबिक 14 साल की किशोरी आठवीं कक्षा की छात्रा है। वह रोजाना कोचिंग में पढ़ने जाती है। वह अपनी मां, पिता और छोटे भाई के साथ रहती है। उसका पिता एक होटल में वेटर का काम करता है। बुधवार को वह कोचिंग गई थी, रोजाना वह साढ़े सात बजे कोचिंग से घर पहुंच जाती थी, लेकिन उस दिन कुछ उसके सवाल थे, उनको पूछने में वह घर पहुंचने में देरी हो गई।

इस बात को लेकर उसके पिता ने उसे गाली-गलौज कर फटकारा और मामला शांत हो गया था, लेकिन गुरुवार को दोपहर नाबालिग का पिता घर लौटा तो उसने उसी बात को लेकर एक बार गाली-गलौज शुरू कर द और बेटी को पीटने लगा। उसने पूजा के तांबे का लोटा उठाकर उससे मारना शुरू कर दिया।

# दारोगा की वर्दी चुराई, पुलिसिया अंदाज में सूने मकानों की रेकी कर करने लगा चोरियां

**भोपाल।** क्राइम ब्रांच ने पुलिस उपनिरीक्षक की वर्दी पहनकर दिन में सूने मकानों की रेकी कर रात में चोरी को अंजाम देने वाले जुबेर मंसूरी गिरोह का पर्दाफाश किया है। किसी को संदेह न हो इसके लिए गैंग में शामिल लोग रेपिडो व ओला में बाइक चलाने का काम भी करते थे, ताकि कालोनियों में सूने मकानों की रेकी की जा सके। आरोपितों ने चोरी की नौ वारदातें कुबूल की हैं। गिरोह सरगना के पास से पुलिस की वर्दी, नकली पिस्टल, ताला तोड़ने के औजार एवं बड़े पैमाने पर चोरी का माल बरामद किया गया है।

एडीसीपी क्राइम ब्रांच शैलेंद्र सिंह चौहान ने बताया कि गुरुवार शाम को मुखबिर से सूचना मिली थी कि दो युवक बाइक से घूमकर कस्तूरबा अस्पताल के सामने भेल के सूने मकानों में तांक-झांक कर रहे हैं। उनमें से एक ने पुलिस की



वर्दी पहन रखी है, लेकिन उसके हाव-भाव से लगता है कि वो पुलिस वाला नहीं है। इस आधार पर पुलिस टीम ने घेराबंदी कर बाइक सवार युवकों को हिरासत में लिया। उनकी पहचान भीमनगर झुग्गी बस्ती निवासी 37 वर्षीय जुबेर मंसूरी एवं प्रेस काम्प्लेक्स स्थित झुग्गी बस्ती निवासी 28 वर्षीय शुभम आट्या के रूप में हुई। पूछताछ करने पर वे पुलिस का परिचय पत्र भी नहीं दिखा सके।

### सीआइएसएफ के दारोगा की वर्दी चोरी की थी

पूछताछ में जुबैर ने पुलिस को बताया कि सादा कपड़ों में सूने मकानों की रेकी करने पर पकड़े जाने का डर रहता था। इस वजह से उसने शुभम के साथ मिलकर पुलिस की वर्दी पहनकर रेकी करने की योजना बनाई। इसके लिए उन्?होंने गोविन्दपुरा में रहने वाले सीआइएसएफ के दारोगा दयाशंकर भधकारे के घर से वर्दी एवं अन्य सामान पर भी हाथ साफ कर दिया। असली पुलिस दिखने के लिये वे लोग एक नकली पिस्टल भी साथ रखते थे, ताकि जरूरत पड़ने पर लोगों को डराया जा सके। इस गिरोह में जुबेर मंसूरी का सगा भाई शाहरुख भी शामिल है।

# ससुर का था दूसरी महिला से अफेयर, बहू को ही दे दी पत्नी की हत्या की सुपारी

**रीवा।** प्रदेश के रीवा जिले में एक महिला की हत्या के मामले का खुलासा पुलिस ने कर दिया है. सास की हत्या के आरोप में बहू और ससुर को पुलिस ने गिरफ्तार किया है. दरअसल, ससुर का किसी दूसरी महिला के साथ अफेयर चल रहा था. वह दूसरी बार दूल्हा बनने का भी सपना देख रहा था. फिर उसने अपनी बहू से ही पत्नी की हत्या करा दी. इसके बाद वह मनगढ़ंत कहानी बनाकर पुलिस को गुमराह करता रहा, लेकिन कड़ी पूछताछ में उसने सारे राज खोल दिए।

मनगवां थाना क्षेत्र के अतरैला गांव से सनसनीखेज वारदात का खुलासा हुआ है. यहां एक बहू ही अपने सास की कातिल निकली. दरअसल 4 दिन पहले गांव में एक महिला की हत्या का मामला सामने आया था. शुक्रवार को पुलिस ने खुलासा करते हुए महिला की बहू और उसके पति को हिरासत में लिया है. बताया जा रहा है कि दूसरी महिला से संबंध के चलते महिला के पति ने अपनी बहू के साथ मिलकर अपनी पत्नी को मारने की साजिश रची थी।

### पुलिस ने किया पूरे मामले का खुलासा

रीवा जिले की मनगवां थाना पुलिस ने महिला की अंधी हत्या का खुलासा करते हुए उसके पति और बहू



को गिरफ्तार किया है. आरोपियों ने पूछताछ में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है. इसके बाद दोनों ही आरोपियों को न्यायालय में पेश करते हुए जेल भेज दिया है. दरअसल महिला के पति का बाहर की दूसरी महिला से प्रेम प्रसंग चल रहा था. इधर सास के द्वारा भी अपनी बहु को भी आए दिन परेशान किया जाता था। इससे परेशान होकर ससुर ने अपने बहू के साथ मिलकर साजिश रचते हुए हसिए से वार कर अपनी पत्नी को मौत के घाट उतार दिया गया, मामले की जानकारी जब पुलिस को हुई तो पुलिस की टीम ने तुरंत महिला के पति और उसकी बहू को गिरफ्तार कर लिया. पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने हत्या के लेकर खुलासे किए हैं।

# पीसीसी अध्यक्ष ने की जांच कमेटी गठित

**भोपाल।** टीकमगढ़ जिले में कांग्रेस पार्टी के नेता और पूर्व मंत्री यादवेंद्र सिंह और उनके परिवार पर हत्या के प्रयास सहित विभिन्न गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। मामले की जांच करने के लिए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कांग्रेस पार्टी की एक उच्चस्तरीय जांच कमेटी का गठन किया है। कमेटी में लाखन सिंह यादव पूर्व मंत्री, आलोक चतुर्वेदी, विधायक अजय टंडन विधायक, घनश्याम सिंह विधायक एवं राजीव शर्मा एडवोकेट को शामिल किया गया है।

# महाकाल मंदिर पहुंची श्रावण मास की पहली कावड़ यात्रा

**उज्जैन।** कोरोना काल के दो साल बाद श्रावण मास में शुक्रवार को पहली कावड़ यात्रा महाकाल मंदिर पहुंची। भक्तों ने कार्तिकेय मंडपम् में लगे जल पात्र से भगवान महाकाल का जलाभिषेक किया। यात्रा के प्रणेता उत्तम स्वामीजी महाराज के साथ कुछ साधु संत व सहयोगियों ने गर्भगृह में जाकर भगवान महाकाल को जल चढ़ाया।

कावड़ यात्रा का शुभारंभ इंदौर रोड स्थित त्रिवेणी संगम से सुबह 11 बजे हुआ। इससे पूर्व यात्रियों ने त्रिवेणी संगम से कावड़ में जल भरा, पश्चात उत्तम स्वामीजी महाराज, महंत विनीतगिरीजी महाराज सहित अन्य साधु संतों ने कावड़ का पूजन किया। इसके बाद बोल बम...के जयकारों के साथ यात्रा महाकाल मंदिर की ओर रवाना हुई। यात्रा में बड़ी संख्या में महिला,पुरुष शामिल थे। नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए यात्रा करीब 2.30 बजे मंदिर पहुंची तथा यात्रियों ने भगवान का जलाभिषेक किया।



# सीबीएसई स्कूलों में नई स्कूल बैग नीति का नहीं हो रहा पालन

### बच्चों के बैग का वजन मानक वजन से है कई गुना ज्यादा

**भोपाल।** सीबीएसई स्कूल दिसंबर 2020 में शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी नई स्कूल बैग नीति 2020 का पालन नहीं कर रहे हैं। इस नीति में कहा गया है कि पहली से 10वीं तक के बच्चों के स्कूल बैग का भार उनके शरीर के वजन के 10 फीसद से अधिक नहीं होना चाहिए।

साथ ही नियमित आधार पर स्कूल के बैग के वजन की निगरानी करनी होगी, लेकिन स्कूली बच्चों के भारी-भरकम बैग से बच्चों के शारीरिक विकास पर विपरीत असर पड़ रहा है। फिजियोथेरेपिस्ट का कहना है कि बैग के वजन के कारण बच्चों में कई तरह की समस्याएं आ रही हैं। इसमें पीठ दर्द, कंधा दर्द, रीढ़ की हड्डी में दर्द और कुबड़ निकलने जैसी समस्याएं सामने आ रही हैं। सीबीएसई स्कूलों के बच्चे बस्ते के बोझ से दबते जा रहे हैं।



भोपाल सहित प्रदेश भर में बच्चे तय मानक से तीन से पांच गुना तक ज्यादा वजन उठा रहे हैं। मप्र बाल आयोग द्वारा प्रदेश के 38 जिलों में किए दौरे के दौरान यह सामने आया है। कुछ स्कूलों में प्रायमरी व मिडिल के बच्चों के स्कूल बैग का वजन 20 से 30 किलो तक पाया गया है, जबकि मानक वजन ढाई किलो तक है। आयोग सदस्य ब्रजेश चौहान ने बताया कि लगभग 80 स्कूलों में प्रायमरी में पढ़ने वाले बच्चों के स्कूल बैग भारी-भरकम हैं। भोपाल में भी यह आंकड़ा 70 प्रतिशत के करीब है। जब बैग का वजन किया गया तो तय मानक से अधिक पाया गया। इसमें केजी-2 की एक बच्ची के बैग का वजन पांच किलो पाया गया।

### 30 जून 2023 तक चलाया जाएगा विशेष भर्ती अभियान

# सरकारी विभागों में अधिकारियों-कर्मचारियों की कमी होगी दूर

प्रदेश में सरकारी विभागों में कर्मचारियों-अधिकारियों की जबर्दस्त कमी है। जानकारी के अनुसार विभिन्न विभागों में 1 लाख से ज्यादा पद रिक्त हैं पर इनके लिए नियुक्तियां नहीं की जा रहीं हैं। प्रदेश में अभी चुनाव की आचार संहिता लागू है, नगरीय निकाय चुनावों और पंचायत चुनावों के लिए आदर्श आचार संहिता के कारण सरकारी नौकरी सहित कई बंदिशें लगी हैं. इस बीच राज्य सरकार ने सरकारी विभागों में भर्ती के लिए बड़ा फैसला लिया है।

**भोपाल।** राज्य के विभिन्न विभागों में अनुसूचित जाति-जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और निशक्तजनों के सरकारी भर्ती की राह खोली गई- राज्य सरकार कई कारण बताते हुए सामान्य वर्ग के लिए भले ही कोई नियुक्ति प्रक्रिया शुरु नहीं कर पा रही है पर अनुसूचित जाति-जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और निशक्तजनों के सरकारी भर्ती की राह खोली गई है. इसके लिए मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार विशेष भर्ती अभियान चला रही है।

राज्य सरकार के प्रवक्ता और मध्यप्रदेश के गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने इस संबंध में विस्तार से जानकारी दी. गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने बताया कि प्रदेश के अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और निशक्तजनों के लिए राज्य सरकार संवेदनशील है. इन वर्गों के लिए राज्य के विभिन्न विभागों में भर्ती के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। बैकलाग के रिक्त पद भरने के लिए विशेष भर्ती अभियान चल रहा है। राज्य सरकार द्वारा बैकलाग के रिक्त पद भरने के लिए विशेष भर्ती अभियान 30 जून 2023 तक जारी रखने का भी फैसला- इसके साथ ही अनुसूचित जाति-अनूसचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और निशक्तजनों के बैकलाग के रिक्त पदों की पूर्ति के लिए राज्य सरकार ने अहम फैसला लिया है. राज्य सरकार द्वारा बैकलाग के रिक्त पद भरने के लिए विशेष भर्ती अभियान 30 जून 2023 तक जारी रखने का भी फैसला लिया गया।

# मतगणना आज, फायनल रिहर्सल हुई, सभी तैयारियाँ पूर्ण

## नगर निगम ग्वालियर के महापौर पद के 7 एवं सभी नगरीय निकायों के पार्षद पद के 816 प्रत्याशियों के भाग्य का होगा फैसला

ग्वालियर। नगर पालिक निगम ग्वालियर सहित जिले के सभी नगरीय निकायों की मतगणना की सभी तैयारियाँ पूर्ण कर ली गई हैं। राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के तहत 17 जुलाई को प्रातः 9 बजे से मतगणना शुरू होगी। शनिवार को जिले के सभी नगरीय निकायों में मतगणना के लिए निर्धारित गणना कक्षों में मतगणना की फायनल रिहर्सल हुई। रिटर्निंग व सहायक अधिकारियों एवं मास्टर ट्रेनर्स ने गणना पर्यवेक्षक व गणना सहायकों को विस्तारपूर्वक मतगणना की बारीकियाँ समझाईं।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी (स्थानीय निर्वाचन) श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने स्पष्ट किया है कि राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशों का पालन करते हुए पूरी पारदर्शिता के साथ मतगणना की जायेगी। उन्होंने सभी प्रत्याशियों एवं अभिकर्ताओं से कहा है कि वे आयोग के निर्देशों का पालन कर मतगणना में सहयोग करें।

नगर निगम ग्वालियर के महापौर पद के 7 व सभी 66 वार्डों से चुनाव लड़ रहे पार्षद पद के 358 प्रत्याशियों सहित जिले के सभी नगरीय निकायों के पार्षद पद के कुल 816 प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला मतगणना के बाद होगा।

नगर पालिका डबरा के सभी 30 वार्डों में पार्षद पद के 146, नगर परिषद आंतरी के 15 वार्डों में 37, भितरवार के 15 वार्डों में 83, बिलौआ के 15 वार्डों में 62, पिछोर के 15 वार्डों में 50 एवं नगर परिषद मोहना के सभी 15 वार्डों में कुल 80 प्रत्याशियों ने चुनाव लड़ा है।

नगर निगम ग्वालियर की मतगणना यहाँ शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय में होगी। इसी प्रकार नगर पालिका डबरा की मतगणना नवीन कृषि उपज मंडी परिसर डबरा, नगर परिषद पिछोर की शासकीय बालक उमावि पिछोर, बिलौआ की शासकीय जमाहर उमावि बिलौआ, भितरवार की शासकीय उत्कृष्ट उमावि भितरवार, आंतरी की बापू उमावि आंतरी एवं नगर परिषद मोहना की मतगणना सेंट एंथोनी स्कूल मोहना में होगी। मतगणना के दौरान सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम रहेंगे। बगैर प्रवेश पत्र के किसी को भी मतगणना परिसर में प्रवेश की अनुमति नहीं होगी। मतगणना के प्रवेश द्वार पर हर व्यक्ति की बारीकी से जाँच की जायेगी।

राज्य निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों के अनुसार सबसे पहले निर्वाचन कर्तव्य मत पत्रों की गिनती शुरू होगी। इसके आधा घंटे बाद ईवीएम (इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन) के वोटों की गिनती शुरू की जायेगी। दोनों प्रकार के मतों की गिनती समानान्तर रूप से जारी रह सकेगी।

### ग्वालियर नगर निगम की गणना 6 कक्षों में होगी

ग्वालियर नगर पालिक निगम में डाले गए मतों की गिनती यहाँ शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय में होगी। गणना के लिए 6 कक्ष निर्धारित किए गए हैं। हर कक्ष में 11 - 11 टेबल लगाई जायेंगी। इस प्रकार हर वार्ड के लिए एक टेबल निर्धारित की गई है। हर गणना टेबल पर एक गणना पर्यवेक्षक व दो गणना सहायक तैनात रहेंगे। इस प्रकार एक टेबल पर तीन अधिकारी मतों की गिनती के लिए तैनात किए जायेंगे। महापौर पद के लिये प्राप्त निर्वाचन कर्तव्य मत पत्रों की गणना रिटर्निंग अधिकारी की टेबल पर की जायेगी। पार्षद पदों के लिए प्राप्त हुए निर्वाचन कर्तव्य मत पत्र संबंधित वार्ड की टेबल पर गिने जायेंगे।

### मोबाइल फोन, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू इत्यादि प्रतिबंधित रहेंगे

मतगणना परिसर में मोबाइल फोन, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, तम्बाकू, खाद्य पदार्थ, पानी की बोतल, कैंची, चाकू, ब्लैड, माचिस व अन्य ज्वलनशील पदार्थ इत्यादि ले जाना प्रतिबंधित रहेगा। दोनों प्रवेश द्वारों पर व्यक्तिशः इसकी सघन जाँच की जायेगी। जिला निर्वाचन अधिकारी श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने कहा है कि गणना के दिन उक्त सामग्री कदापि लेकर न आएं। उन्होंने कहा मतगणना परिसर में गहन जाँच और प्रवेश पत्र देखने के बाद ही प्रवेश की अनुमति दी जायेगी।

### मतगणना परिसर साइंस कॉलेज में प्रवेश व पार्किंग तथा यातायात व्यवस्था

नगर निगम ग्वालियर की मतगणना पर नजर रखने के लिए प्रत्याशियों द्वारा नियुक्त किए गए गणना अभिकर्ता शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय के गेट नं.-1 से मतगणना परिसर में प्रवेश कर सकेंगे। गणना अभिकर्ताओं के वाहनों की पार्किंग व्यवस्था अचलनाथ मैरिज गार्डन में की गई है।

मतगणना के लिये तैनात किए गए शासकीय अधिकारी एवं कर्मचारी आदर्श विज्ञान महाविद्यालय के गेट नं.-2 से प्रवेश कर सकेंगे। शासकीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों की पार्किंग व्यवस्था मायरा मैरिज गार्डन में की गई है।

प्रवेश पत्र धारी मीडिया प्रतिनिधिगण अपने वाहनों को हरिदर्शन स्कूल में पार्क कर आदर्श विज्ञान महाविद्यालय के गेट नं.-2 से मतगणना परिसर में प्रवेश कर सकेंगे।

मतगणना कर्मियों एवं अभिकर्ताओं के साइंस कॉलेज में प्रवेश के बाद विवेकानंद चौराहे से चंद्रबदनी नाका चौराहे तक नो व्हीकल जोन रहेगा अर्थात आवागमन को पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया जायेगा।

मतगणना के दिन झाँसी, गुना व शिवपुरी की ओर से आने वाली बसें सिकरौदा तिराहे से सचिन तेंदुलकर मार्ग होते हुए बर स्टेण्ड तक पहुँच सकेंगीं। इसके अलावा अन्य छोटे वाहन चेतकपुरी, अचलेश्वर चौराहा, मांढरे की माता, कैंसर पहाड़िया व चंद्रबदनी नाका होकर शहर में प्रवेश कर सकेंगीं।

## निजी एजेंसी एवं भवन स्वामी को स्ट्रक्चर पर सार्वजनिक प्रस्तुत करना होगी विज्ञापन निगम अनुमति

**अब शहरवासी भी जान सकेंगे यूनीपोल एवं होर्डिंग की वैधता के बारे में**

ग्वालियर। नगर निगम सीमा अंतर्गत लगे विभिन्न होर्डिंग एवं यूनीपोल की वास्तविक स्थिति जानना अब शहर वासियों के लिए भी आसान होगा, क्योंकि विज्ञापन एजेंसी संचालक एवं भवन स्वामी को होर्डिंग अथवा यूनीपोल पर लगे विज्ञापन के नीचे निगम द्वारा प्रदान की गई अनुमति की जानकारी लगाना अनिवार्य होगी अन्यथा उनका होर्डिंग अवैध माना जाएगा।

नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कन्याल ने इस संबंध में आदेश जारी करते हुए कहा कि ग्वालियर नगर निगम सीमा के अन्तर्गत म.प्र. आउटडोर मीडिया अधिनियम-2017 में निहित प्रावधानों के अन्तर्गत विज्ञापन प्रदर्शित करने हेतु ऑनलाईन प्रक्रिया अनुसार पोर्टल पर स्वीकृति प्रदान की जाती है। प्रायः यह देखने में आ रहा है, कि संबंधित भवन स्वामी / विज्ञापन ऐजेन्सियों के द्वारा प्रदर्शित विज्ञापन पर अथवा होर्डिंग / यूनीपोल पर ओ.एम.डी. नम्बर/ रजिस्ट्रेशन नम्बर/वैधता अवधि दिनांक अंकित नही की जाती है। जिससे भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है, कि किया जा रहा विज्ञापन वैध अथवा अवैध है।

# स्वच्छता हम सभी की जिम्मेदारी, ना स्वयं गंदगी करें ,ना किसी को करने दें

### निगमायुक्त ने निरीक्षण कर सभी को दिया स्वच्छता का संदेश

ग्वालियर। स्वच्छता के प्रति सजग नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कन्याल अब खुद सड़को पर उतर कर लोगो को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के साथ ही उनकी गलती का एहसास करा कर आमजन को समझाने का कार्य भी कर रहे हैं। निरीक्षण के दौरान अधीक्षण यंत्री श्री जेपी पारा, कार्यपालन यंत्री श्री जागेश श्रीवास्तव सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

निगमायुक्त श्री कन्याल निगम मुख्यालय के सामने से निकल रहे थे, तभी एक निजी कंपनी में काम करने वाले बाइक सवार ने सड़क पर गुटखा खा कर थूक दिया। जिसके बाद निगमायुक्त श्री कन्याल ने सड़क पर थूकने वाले युवक से ही सड़क पर थूकी गयी गंदगी को साफ कराया, जिसके बाद उस युवक ने माफी मांगी और ऐसा दोबारा न करने की बात कही। वही क्षेत्र भ्रमण के दौरान कई जगह लोग खुले में दीवार पर बाथरूम करते हुए दिखाई दिए। लेकिन जब उन्हें पकड़ा गया तो उन्है शर्मिंदगी का एहसान हुआ और माफी मांग कर ऐंसा न करने की कसम खाई।

निगमायुक्त श्री कन्याल ने निरीक्षण के दौरान पाया कि काल्पी ब्रिज के पास बने डिवाइडर से आये दिन दुर्घटना की सम्भावना बनी रहती थी। इसको लेकर निगमायुक्त श्री कन्याल ने संबंधित अधिकारियों को डिवाइडर को सीधा बनाने के निदेश दिये। इसके साथ ही निगम की लेब के निर्माण कार्य को देखा तथा संबंधित अधिकारियों को शीघ्र ही कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिये। निरीक्षण में हजीरा चौराहे पर सड़क घेर कर अतिक्रमण कर रहे, गन्ने की रस की दुकानों पर निगमायुक्त श्री कन्याल ने नाराजगी जाहिर करते हुए सफाई रखने की हिदायत दी। साथ ही दुकानदारों पर जुर्माना भी लगाया गया। साथ ही किलागेट रोड पर नाश्ते की दुकान पर गंदगी करने पर दुकानदार और ग्राहको को गंदगी न करने की समझाइश दी गयी। इसके साथ ही गजराराजा स्कूल के पास बने नगर निगम के काम्प्लेक्स का निगमायुक्त श्री कन्याल ने निरीक्षण कर, रैंप को ठीक करने आदेश दिए। साथ ही खाली पड़ी दुकानों के ऑक्शन की जिम्मेदारी भी संबंधित अधिकारियों को दी।

# सीमा सुरक्षा बल अकादमी टेकनपुर में उपनिरीक्षक (सीधी भर्ती) की भव्य दीक्षांत परेड आयोजित

ग्वालियर। सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर में शनिवार को उप निरीक्षक (सीधी भर्ती) क्रमांक 66 की भव्य दीक्षांत परेड का आयोजन किया गया। दीक्षांत परेड़ में कुल 231 प्रशिक्षु अधीनस्थ अधिकारियों की आठ प्लाटूनों ने अपर महानिदेशक व निदेशक सीमा सुरक्षा बल अकादमी श्री पंकज गूमर के मुख्य आतिथ्य में शानदार परेड कौशल का प्रदर्शन किया।

दीक्षांत परेड की शुरूआत मार्कर के परेड ग्राउण्ड पर आने से शुरू हुआ। परेड ने वीरांगना लक्ष्मीबाई परेड स्थल पर सुसज्जित होकर पहले श्री के एल साह, उप महानिरीक्षक, अकादमी टेकनपुर तथाश्री जे एस ऑबराय, वीएसएम, महानिरीक्षक/ संयुक्त निदेशक एवं मुख्य प्रशिक्षक अकादमी टेकनपुर को सलामी दी।

मुख्य अतिथि श्री पंकज गूमरने पहले शहीद स्मारक, अजेय प्रहरी पर जाकर पुष्पचक्र एवं श्रद्धांजलि अर्पित की। उसके उपरान्त सीमा सुरक्षा बल के अश्वरोही दल की अगवानी में परेड स्थल पर पहुंचे और वहां परेड की सलामी ली। इसके बाद सुसज्जित परेड का निरीक्षण किया। परेड कमाण्डर प्रशिक्षु अधिनस्थ अधिकारी श्री विनय कांडपाल तथा सभी प्रशिक्षु अधीनस्थ अधिकारियों ने मुख्य अतिथि श्री पंकज गूमर के समक्ष देश के संविधान के प्रति एकता, अखण्डता व सम्प्रभुता को बनाये रखने के लिये अपने आपको समर्पित करने की शपथ ली।

इन प्रशिक्षुओं ने अकादमी के संयुक्त निदेशक श्री जे एस ऑबराय वीएसएम, महानिरीक्षक श्री के एल साह, उप महानिरीक्षक श्री प्रदीप कुमार दुबे, कमाण्डेंट एवं अधिकारी प्रशिक्षण केन्द्र की प्रशिक्षण टीम के कुशल मार्गदर्शन में 51 सप्ताह का कठिन प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने आपको देश की सीमाओं की देखभाल के लिए सक्षम बनाया है। प्रशिक्षण में शारीरिक प्रशिक्षण, ड्रिल, युद्ध कौशल, निशानेबाजी, विधि व कानून, मानवाधिकार अधिनियम, पुलिस की रोजमर्रा की कार्यवाही, आपदा प्रबंधन, मैप रीडिंग, सीमा की निगरानी, आतंकवाद व उग्रवाद से निपटने की कला जैसे विषयों के साथ वाहन चलाना, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, तैराकी और एडवेन्चर ट्रेनिंग का भी गहन प्रशिक्षण शामिल है। ट्रेनिंग के दौरान इनके व्यक्तित्व को संवारने, चरित्र निर्माण तथा नेतृत्व क्षमता को विकसित करने पर विशेष कार्यक्रम के साथ - साथ विभिन्न सीमान्तों की सीमाओं का दौरा (बार्डर टूर) भी कराया गया है।

मुख्य अतिथि श्री गूमर ने दीक्षांत परेड समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आज प्रशिक्षु अधिकारियों का स्मार्ट टर्न आऊट, निपुण ड्रिल एवं जोश इस अकादमी में प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त किए उच्च दर्जे के व्यावहारिक प्रशिक्षण, सक्षमता, आत्मविश्वास को जाहिर करता है। मुझे यकीन है कि आप अपनी लगन, समर्पण एवं कठोर परिश्रम की बदौलत न सिर्फ सीमा सुरक्षा बल का, वरन् भारतवर्ष का नाम दुनिया में रोशन करेगें।

# प्राइवेट बिजली की डीपी पर जबरदस्ती डरा धमका कर केवल डालने का किया प्रयास

ग्वालियर। भगवान सिंह राठौर पुत्र लक्ष्मण सिंह राठौर निवास लाल टिपारा गैस गोदाम रोड साई नगर रहते हैं उन्होंने अपने फ्लोर मिल के लिए एक प्राइवेट डीपी लगवा रखी है अपने प्लॉट में जिस मोहल्ले के लोग भगवान सिंह राठौर को डरा धमका कर जबरदस्ती डीपी पर अपनी केवल डालने का प्रयास करते हैं भगवान सिंह द्वारा डीपी पर केवल ना डालने के मना करने पर दबंगों द्वारा गाली गलौज और जान से मारने तक की धमकी देते हैं मोहल्ले के कुछ मुख्य लोग बिजली के तार डालने वाले जितेंद्र कुशवाहा हाकिम सिंह बृजेश भदोरिया यह सबं 11:07 2022 को शाम को 8:30 बजे मेरे पास आए और जबरदस्ती डीपी पर तार डालने लगेत भीवान सिंह द्वारा.रोकने पर गाली गलौज करने लगे और बोला कि तुझे यहां रहना है कि नहीं हम तुझे जान से मार देंगे।

आज 12:07 2022 को हाकिम सिंह के लड़के हाईटेंशन लाइन से करंट लग जाने के कारण इसका इल्जाम हाकिम सिंह ने मुझ पर आरोप लगा दिया की भगवान सिंह से जब मीडिया कर्मी ने पूछा की करंट किसको लगा और कैसे लगा भगवान सिंह द्वारा बताया गया हाईटेंशन लाइन के द्वारा करंट लगा है मुझ झूठा आरोप लगा रहे हैं भगवान सिंह ने मीडिया को बताया।

## पौधारोपण के साथ ही चलाया जा रहा है चौराहों व डिवाइडरों को हरा-भरा करने का अभियान

ग्वालियर। ग्वालियर शहर को हरा-भरा एवं प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए नगर निगम ग्वालियर द्वारा वृहद स्तर पर जनसहयोग से पौधारोपण किया जा रहा है। इसके तहत प्रतिदिन निगम के पार्क विभाग द्वारा पौधारोपण का अभियान नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कन्याल के निर्देशन में चलाया जा रहा है। नोडल अधिकारी पार्क श्री मुकेश बंसल ने जानकारी देते हुए बताया कि निगमायुक्त श्री किशोर कन्याल के निर्देशन में शहर में विभिन्न स्थानों पर पौधारोपण का कार्य तेजी से किया जा रहा है। जिसके तहत हजीरा, मुरार, ठाठीपुर एवं साइंस कॉलेज पर 250 पौधों का रोपण किया गया तथा अंकुर एप डाऊनलोड कराया गया। इसके साथ ही मेला रोड डिवाइडर पर गैंग के द्वारा कटाई छटाई का कार्य कराया गया। बेटी बचाओ एवं नाका डिवाइडर पर 100 कन्हेर के पौधों का रोपण किया गया। इसके साथ ही उपमन्यु पार्क में फाइकस के पौधे लगाए गए। इसके साथ ही निगम के पार्क अमले द्वारा सुपरवाइजर श्री शुभम शाक्य के निर्देशन में रेसकोर्स रोड के डिवाइडर एवं रोड के दोनों ओर हैंडमेड ओजार तथा वीडर से पौधों की ट्रिमिंग अनवांटेड झड़ियों की सफाई कराई गई। साथ ही संचित तेंदुलकर मार्ग फुटबॉल वाले गोलम्बर पर साफ सफाई कराई एवं दूबा भी लगवाई गई। साथ ही सिटी सेंटर डिवाइडर जैन स्तंभ से यूनिवर्सिटी डिवाइडर पे पेड़ लगवाए गए।

## संक्षिप्त समाचार

### जिला एवं राज्य स्तर पर होगा यूथ महापंचायत का आयोजन जिला स्तरीय यूथ-पंचायत 18 जुलाई को

ग्वालियर। स्वाधीनता के अमृत वर्ष पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री चंद्रशेखर आजाद की 116वीं जन्म जयंती पर युवाओं में नेतृत्व का विकास करने की दिशा में 18 जुलाई को जिला स्तर पर यूथ-पंचायत होगी। इसके बाद 23 व 24 जुलाई को भोपाल में यूथ महापंचायत का आयोजन होगा। जिसमें ग्वालियर जिले के युवा भी सहभागिता करेंगे। यूथ-पंचायत के लिए ऑनलाइन पंजीकरण से जिला स्तर पर सभी पंजीकृत प्रतिभागियों की प्राथमिक स्क्रीनिंग चयनित कॉलेज में होगी। स्क्रीनिंग द्वारा चयनित प्रतिभागियों को यूथ-पंचायत के लिए जिले के निर्धारित कार्यक्रम स्थल पर आमंत्रित किया जायेगा। आमंत्रित प्रतिभागी अपनी पात्रता का सत्यापन कराने के बाद ग्रुप डिस्कशन करेंगे। चयन समिति द्वारा प्रतिभागियों का मूल्यांकन उनके दक्षता, आचरण, विषय का ज्ञान, विपक्ष के मतों के प्रति धैर्य, विचारों की स्पष्टता और काउंटर पॉइन्ट रखने की क्षमता के प्रदर्शन के आधार पर किया जायेगा। प्रत्येक समूह से आए एक अथवा दो प्रतिभागियों को फाइनल राउंड के ग्रुप डिस्कशन के बाद उत्कृष्ट 6-8 प्रतिभागियों का चयन भोपाल में होने वाली यूथ-महापंचायत के लिए किया जायेगा, जहाँ वे राज्य स्तर पर जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे। ग्वालियर में जिला स्तरीय युवा महापंचायत एवं स्क्रीनिंग के लिये केआरजी कॉलेज (70 प्रतिभागी) , व्हीआरजी कॉलेज (40 प्रतिभागी), माधव महाविद्यालय (30 प्रतिभागी), माधव लॉ कॉलेज (20 प्रतिभागी), एमआईटीएस (20 प्रतिभागी), आईटीएम यूनिवर्सिटी (10 प्रतिभागी), आईटीटीएम जीओआई कॉलेज (10 प्रतिभागी) का चयन किया गया है। यूथ पंचायत में 15 से 29 आयु वर्ग के युवाओं को शामिल किया जायेगा।

### सुख में सब साथ देते हैं दुःख के समय धर्म ही साथ देता हैः मुनिश्री

**मुनिश्री के मंगल प्रवचन प्रतिदिन प्रातः 8 :30 बजे से माधवगंज में होंगे।**

ग्वालियर। धर्म के मूल में ही व्यक्ति का कल्याण है। जीवन में अपने धर्म, देव, गुरु, माता, पिता को कभी नहीं भुलाना चाहिए। धर्म ही संकट के समय साथ देगा। सुख में सब साथ देते हैं लेकिन दुःख के समय धर्म, ही साथ देता है। अपने संस्कारों, संस्कृति को आत्मसात करे। जिसने भी गुरु माता-पिता को धोखा दिया है, उनको कष्ट सहन करना पड़ा है। माता-पिता, गुरु के उपकार कभी नहीं भूलना चाहिए। यह विचार श्रमण मुनिश्री विनय सागर महाराज ने आज शनिवार को माधवगंज स्थित अशियाना भवन चातुर्मास स्थल पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। मुनिश्री ने कहा कि शिक्षा संस्कारों के साथ मिले उसे स्वीकार करना चाहिए। प्रभु का नाम, ज्ञान, ईश्वर की आराधना, जिनवाणी, गुरुवाणी करना चाहिए। धर्म के आगे दुनिया को झुकना ही पड़ता है। जितना धर्म रूपी बीज बोया गया है, मिट्टी में मिलकर फलीभूत होता है।

**मुनिश्री के पाद प्रक्षालन कर दीपो से महा आरती उतारी**

जैन समाज के प्रवक्ता सचिन जैन ने बताया कि मुनिश्री विनय सागर महाराज के पाद प्रक्षालन दिगंबर जैन जागरण मंच ग्रेटर के अध्यक्ष महेंद्र जैन, सचिव दिनेश जैन नीरज जैन, अमित जैन, दीपक जैन ने सामूहिक रूप से किए। मुनिश्री की दीपो से महा आरती नरेशचंद मीना जैन अवनीश जैन सहित जैन समाज के समाजजनो ने संगीतमय भक्तिभाव के साथ नृत्य करते हुए उतारी। मुनिश्री के मंगल प्रवचन प्रतिदिन प्रातः 8 :30 बजे से चातुर्मास स्थल अशियाना भवन डॉ आहूजा वाली गली माधवगंज ग्वालियर होंगे।

**आज इंसान दूसरों को नीचा दिखाने का कार्य करता है**

मुनिश्री ने कहा कि सम्यक दर्शन, सम्यक दृष्टि अपनाते हुए जीवन व्यतीत करें। आज व्यक्ति स्वार्थ पूर्ति में डूबा हुआ है। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए एक दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयास कर रहा है। एक साधु दूसरे की बुराई करने में, एक व्यक्ति दूसरे से ईर्ष्या करने लगा है। आज का इंसान दूसरों को नीचा दिखाने का कार्य करता है, दूसरों की वृद्धि को देखकर जलता है। व्यक्ति अपने से ज्यादा सामने वाले को देखकर जलता है। हर इंसान को अपने ऊपर विश्व होना चाहिए।

### ग्वालियर एवं पूर्व विधानसभा में 18 एवं 19 जुलाई को सीधी जल सप्लाई रहेगी प्रभावित

ग्वालियर। तलवार वाले हनुमान जी मंदिर के सामने जलालपुर पर 1600 एमएम ग्रेविटी मैन के लिए का संधारण कार्य होने के चलते 18 जुलाई 2022 सोमवार को दोपहर 12:00 बजे से 19 जुलाई मंगलवार तक उपनगर ग्वालियर एवं ग्वालियर पूर्व विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत किया जाने वाला जल प्रदाय प्रभावित रहेगा। सहायक यंत्री मोतीझील श्री हेमंत कुमार शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि दिनांक 18 जुलाई 2022 सोमवार को तलवार वाले हनुमान जी के सामने जलालपुर पर 1600 एमएम ग्रेविटी मैन के लीकेज का संधारण कार्य होने से 160 एम एल डी जलशोधन संयंत्र जल प्रदाय बन्द रहेगा । जिसके कारण सोमवार दोपहर 12 बजे से 19 जुलाई 2022 मंगल वार प्रातः 8 बजे तक उपनगर ग्वालियर एवं ग्वालियर पूर्व विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत जल प्रदाय व्यवस्था भरी हुई टंकियों से ही हो सकेगी। जिस क्षेत्र में सीधी सप्लाई होती है। वह प्रभावित रहेगी उस क्षेत्र में टैंकरों से के माध्यम से ही जल प्रदाय किया जा सकेगा ।

### निगम के संसाधनों में शामिल हुए 3 ट्रॉली व 10 चलित शौचालय

ग्वालियर। निगमायुक्त श्री किशोर कन्याल ने निर्देशानुसार नगर निगम ग्वालियर बेडे में संसाधनों की कमी को दूर करते हुए आवारा पशुओं को पकडने के 3 ट्रोले एवं 10 चलित शौचालय अत्याधुनिक वाहन सामिल किये गए है। नोडल अधिकारी मदाखलत श्री केशव सिंह चौहान ने जानकारी देते हुए बताया कि ग्वालियर नगर निगम बेड़े में शामिल आवारा पशुओं को पकड़ने वाले वाहन का पूजन निगमायुक्त श्री कन्याल ने मदाखलत अमले के कर्मचारी से पूजन करा कर शामिल करया। नए हाइड्रोलिक वाहन से सड़कों से आवारा पशुओ को आसानी से चढ़ाने उतारने में मदद मिलेगी। इससे गाय पकड़ने में समस्या नहीं होगी एवं ज्यादा संख्या में गाय रखी जा सकती हैं। इस प्रकार के 3 ट्रोले निगम द्वारा क्रय किए गए हैं।

इसके साथ ही नगर निगम ग्वालियर द्वारा शहर में स्वच्छता बनाए रखने की दृष्टिगत 10 नग बायो चलित शौचालय क्रय किए गए है। उक्त शौचालय में इंडियन टॉयलेट सीट के अलावा 2 यूनिट वेस्टर्न टॉयलेट की भी लगाई गई है एक यूनिट में कुल 8 टॉयलेट एवं 2 लेडीज यूरिनल की सुविधा प्रदाय की गई है। इसके अतिरिक्त इसमें सोलर यूनिट भी लगाई गई है जिससे रात्री में प्रकाश की सुविधा प्रदाय की जा सके।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णौपुरम्, एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रित करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनूमान मंदिर के पास, भिण्ड रोड, गोले का मंदिर जिला ग्वालियर, मध्य प्रदेश 474005 से प्रकाशित। संपादक- भरत सिंह चौहान पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिये जिम्मेदार। E-mail : pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, M.: 8269307478